चौबोला–भुजभरि अंकमलेहु दूतिका हरिसों कहत सयानीजी॥
नहीं कुँवरि राधा सी तिहुँपुर मुख सोभाकी खानीजी॥
बडभागिन तुम वश भये जाके तुम सम धन्य न आनीजी॥
सुनत सिहाय दूतिका वानी हरिजनके सुखदानीजी॥ १॥
पुलकित अंग धीरनहिं धारे जोवत मग सुखदाईजी॥
निजकर सुमन सुगंधि लगाये कुंजभवनके माईजी॥
अति कोमल तनजान पियारी रचि रचि सेज बनाईजी॥
जो द्रुम लता लटकि तन लागे सो ऊपर उरझाईजी॥ २॥

दोहा–प्रेम प्रीति रस वश सदा, जगस्वामी बनवारि॥
करत चरित नाना विधी, हँसी देखिकै ग्वारि॥

चौबोला–हँसी देखिकै ग्वारि श्यामको देखे आतुरताईजी॥
जान प्रेम वश हरि सुखदाई गई बहुरि अतुराईजी॥
करि शृंगार राजति जहाँ प्यारी तहाँ दूतिका आईजी॥
सहज रूपकी राशि किशोरी भूषण अधिकसुहाईजी॥ १॥
निरखि मदन तिय कोटि लजाई अंग अंग छबि भारीजी॥
त्रिभुवन छबि मनु विधिहि बटोरी कीनी राधा प्यारीजी॥
देखि रूप मन मगन सखी तब बोली वचन सँभारीजी॥
धन्य धन्य वृषभानु दुलारी तुम गुण रूप अपारीजी॥ २॥

दोहा–तिहुँपुर सुन्दरि नागरी, तो समान नहिं तीय॥
तू मोहन मनभावती, वसत सदा पियजीय॥

चौबोला-वसत सदा पियजीय वेगि अब चलहु जहाँ सुखदाईजी॥
लागि रही पियकी इत आशा अति मन आतुरताईजी॥
गावत तुम गुण कुँवर कन्हाई जपत नाम मन लाईजी॥
तुम तन परस पवन जो जाई परिरंभत उठ ताईजी॥ १॥
धरत ध्यान दृग मूंदि निरंतर तेरे गुण मन भावेजी॥

रमी श्याम तन तू मन जाते राधा रमण कहावेजी ॥
सुनि सहचरिके मुखकी बाणी पुलकि अंग सुख पावेजी ॥
चलीं प्रेम पियको उर जानी गजगति चलन सुहावैजी ॥ २ ॥
दोहा—मुखशशि कनकलता दुती, मृग छबि नैन सुहाइ ॥
भूषण बसन अनेक नव, अंग अंग छबि छाइ ॥
चौबोला—अंग अंग छबि छाइ सुगंधी शुभग मनोहर ताईजी ॥
भँवर भीर चहुँ ओर लुभाये गूंजत अजि छबि छाईजी ॥
हँसि हँसि कहत सखी सों बातें सो छबि कहत न आईजी ॥
झरत सुमन जनु रूप लताते चलीं मिलन पिय पाईजी ॥ १ ॥
ऐसे करत प्रकाश पियारी धरत चरण गति मंदैजी ॥
अति मन परम हुलास किशोरी गई जहाँ ब्रज चंदैजी ॥
परम प्रेम मिले दोउ हरषित श्रीराधा नँद नँदेजी ॥
गुण आगर नागर नवल युग छबि सागर सुख कंदेजी ॥ २ ॥
दोहा—वेद भेद जानत नहीं, जो प्रभु अपरंपार ॥
बरणि पारको पावही, सो ब्रज करत विहार ॥
चौ०—सो ब्रज करत विहार हरीको पार कोउ नहिं पावेजी ॥
कुंजन मंजु सुफल छबि छाई गूंजत भँवर सुहावेजी ॥
रुचि रुचि सुमनन सेज बनाई अति छबि बरनि न जावेजी ॥
फूले खग गण करत किलोलें जहाँ तहाँ शब्द सुनावेजी ॥ १ ॥
तनमन फूले पिय अरु प्यारी सो छबि कहत न आईजी ॥
सहचरि सहित मनोहर जोरी राजत अति छबि छाईजी ॥
हास विलास करत सुख पाई हाव भाव उपजाईजी ॥
सखी कह्यो तबके अब नीके सुनत हँसी सकुचाईजी ॥ २ ॥
दोहा—नैन कोर पियतन लख्यो, हँसे देखि सुखदाइ ॥
यह छबि निरखति सहचरी, बार बार बलि जाइ ॥

चौबोला—बार बार बलिजाइ अचल रहो जोरी यह सुखदाईजी ॥
धनि राधा धनि कुँवर कन्हाई महिमा वरनि न जाईजी ॥
धन्य मान रसकेलि सुहाई धन्य कुंज जन भाईजी ॥
धन्य लता द्रुम सुमन सुहावन धन्य भूमि छवि छाईजी ॥ १ ॥
धन्य सखी धनि सब ब्रजवासी तुम सम धन्य न काईजी ॥
तुमसों अतिहित कारि सुखराशी विहरत संग कन्हाईजी ॥
गये श्याम श्यामा सदन निज सखी सहित सुख पाईजी ॥
मानचरित रसकेलि कियो हरि विहारन बलि बाले जाईजी ॥

दोहा—जेसुभाव गावहिं सुनहिं, मानचरित्र अनूप ॥
राधा कृष्ण प्रतापते, ते न परैं भवकूप ॥

चौबोला—ते न परैं भव कूप हरीको मानचरित जो गावैजी ॥
सुखसागर भक्तन हितकारी नाना चरित उपावैजी ॥
जाको शिव अज ध्यान लगावैं सनकादिक मुनि ध्यावैजी ॥
गावत अहिपति नारद शारद ताको पार न आवैजी ॥ १ ॥
अखिल अनीह अकाम अभोगी योग समाधि न पाईजी ॥
युवतिन प्रेम भक्त सब कामी अन्तर्यामि कन्हाईजी ॥
बहु नायक ह्वै करत विहारा ब्रज पुर घर घर माईजी ॥
काहु रुठावै काहु मनावै रसलीला उपजाईजी ॥ २ ॥

दोहा—अवध बदत हरिकाहु सों, जात काहुके धाम ॥
सांझ कहत आवन जहां, जात प्रात तहाँ श्याम ॥

चौ०-जात प्रात तहाँ श्याम सखी सब जानाति पतिहि कन्हाईजी
कोउ आदरहीं कोउ अपमाने कोउ कछु कहत सुनाईजी ॥
खंडित वचन सुनत सुखपाई यह लीला मन भाईजी ॥
ब्रजबानितनके संग करत हरि रसलीला सुखदाईजी ॥ १ ॥
अखिल कामके पूरण करता भरे प्रेम रसमाईजी ॥

कोटि काम कमनीय मनोहर अतिसुन्दर सुखदाईजी ॥
रमणी मन रमणीय विहारी नागर नवल कन्हाईजी ॥
ब्रज वीथिन नँद नंदन ठाढे अंग अंग छवि छाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आई ललिता ताहि मग, रोकि लई नँदलाल ॥
देखि छवी घनश्यामकी, बोली हरिसों बाल ॥
चौबोला—बोली हरिसों बाल काहिको रोकत हो मगमाईजी ॥
जाहु चले जितहो हित माने लरिहै सो सुनपाईजी ॥
झूंठहि इतो सनेह जनावो ऊपर लोग दिखाईजी ॥
कबहूं हमरे धाम न आवो सुनि बोले सुखदाईजी ॥ १ ॥
हरि हँसि कह्यो आज निशि ऐहैं अन्त कहूं नहिं जाईजी ॥
ऐसे कहि मधुरे मुसकाई छाँडी मग सुखदाईजी ॥
ललिता गई सदन यह जानी ऐहैं आज कन्हाईजी ॥
सांझहिते हरि पंथ निहारै रुचि रुचि सेज विछाईजी ॥ २ ॥
दोहा—साजे तनु भूषण बसन, नवल शृंगार बनाय ॥
अंजन आँजों हगनसों, सुमन सुगंध मँगाय ॥
चौबो—सुमन सुगंध मँगाय माल कर निज रुचि आप बनाईजी ॥
कबहूं ठाढी होत दुवारे कबहुंक गगन लखाईजी ॥
कहति श्याम आये क्यों नाई अर्धनिशा ह्वै आईजी ॥
गये आशदे मोहिं पुनी उन धारी कहा मनमांईजी ॥ १ ॥
वे बहुनायक श्याम कन्हाई अनताहि कहूं लुभायेजी ॥
मन मन शोचति बाम धाम मम कारण कहा नहिं आयेजी ॥
कैधों कछू ख्याल चित दीनों कै सोये अलसायेजी ॥
कैधों मात पिता डरकीनों कै आवत सकुचायेजी ॥ २ ॥
दोहा—ऐसे सोचत निश गई, नाहिं आये घनश्याम ॥
तमचरकी वाणी सुनी, दुखित भई तव बाम ॥

चौबोला—दुखित भई तब बाम मारि मन बैठ रही घर माईजी ॥
कछुक सोच उर कछु रिस धारी धीर धरत मननाईजी ॥
हरि निश बसे सखी शीलाके सुन्दर श्याम कन्हाईजी ॥
सुख सोवत तहां रैन गँवाई तब ललिता सुधिआईजी ॥ १ ॥
चले सहज शीलासों कहिकै जिय सकोच गिरिधारीजी ॥
आये ललिता सदन विहारी चितै रही मुख ग्वारीजी ॥
अधर दीप सुत रेख सुहाई पीक नैन दुति कारीजी ॥
शोभित ललित कपोलन सुन्दर अंजन सों छबि भारीजी ॥ २ ॥

दोहा—तुरत मुकुर लैकर उठी, सन्मुख आनि दिखाय ॥
कहति देखि निज वदन पुनि, तब कहुँ लाल सिधाय॥

चौबोला—तब कहुँ लाल सिधाय कहां यह ऐसे रंग बनायेजी ॥
कहां आज निश जागे मोहन प्रात होत इत आयेजी ॥
पीक पलक अंजन अधरनपर देखि श्याम सकुचायेजी ॥
रहे निचौहे नैनन करि मुख वचन कहत सरमायेजी ॥ १ ॥
ज्यों ज्यों हठ तब करत नागरी त्यों त्यों सकुचत श्यामैंजी ॥
हाहा मुख इत फेरहु मोहन देखहु छवि अभिरामैंजी ॥
सकुचत कहा बोलके सांचे अब आये मम धामैंजी ॥
धनि तुम जहां रैन सुख दीनो धन्य धन्य वह बामैंजी ॥ २ ॥

दोहा—तुम जिन आनहु विलग मन, मैं मानति आनंद ॥
क्यों दर्पण देखत नहीं, सूधे मुख ब्रजचंद ॥

चौबोला—सूधे मुख ब्रज चंद कन्हाई क्यों नहिं मुकुर निहारोजी
ठाढे कत बैठत क्यों नाईं कहा जिय माँहि विचारोजी ॥
ऐसी कहा चूक परि मोते कहो न दोष हमारोजी ॥
रहे मूक ह्वै कहा ठगेसे कछु मुख वचन निकारोजी ॥ १ ॥
उत्तर मोंहि देत क्यों नाईं मैं कहा बकति वृथाईजी ॥

तब चितये दृगकोर कन्हाई भावाधीन जनाईजी ॥
ग्वालि प्रवीन जान सब लीनो तुरत रोष विसराईजी ॥
भले श्याम ऐसेहू आये लीने कंठ लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा–निश आलस जाने हरी, अति सनेह करि बाम ॥
अंग सुगंध लगाय तब, तुरत न्हवाये श्याम ॥

चौबोला–तुरत न्हवाये श्याम वसन अरु भूषण नव पहरायेजी
रुचि भोजन करवाय श्यामको बीरा पान खवायेजी ॥
सुफल मनोरथ किये नागरी रस वश करि मन भायेजी ॥
दास विहारीको प्रभु ठाकुर सुर मुनि पार न पायेजी ॥ १ ॥
सो गोपीवल्लभ भये आई प्रीति विवश गिरिधारीजी ॥
कहत सोंह करि रसिक विहारी तुम प्राणनते प्यारीजी ॥
सदा वसत तुम मोमन माईं इक क्षण होत न न्यारीजी ॥
ऐसे कहि अति प्रीति जनावै चतुर श्याम बनवारीजी ॥ २ ॥

दोहा–यहै भाव युवतीन सों, भाषत सुखके धाम ॥
सबहिनके मनकी रुची, राखत श्रीघनश्याम ॥

चौबोला-राखत श्रीघनश्याम गोपिका अति मन आनँद भारीजी
सब गोपी हरिसों अनुरागीं कुल मर्यादा डारीजी ॥
विन देखे रसभाव बढ़ावै. देखत होय सुखारीजी ॥
ब्रह्म सनातन जग सुखकारी यह लीला विस्तारीजी ॥ १ ॥
ललिताको सुख दे सुखसागर चले सदन नँदलालैजी ॥
उतते मग आवति चंद्रावलि देखे उन गोपालैजी ॥
बने अति चारु कमलदल लोचन चितवन सुभग विसालैजी ॥
खोरि साँकरी भइ भटभेरी लखि मुसकाई बालैजी ॥ २ ॥

दोहा–हमहिं विसारी लाल अब, कहां रहत हो श्याम ॥
ऐसे कहि चंद्रावली, हँसि बोले सुखधाम ॥

चौबोला–हँसि बोले सुखधाम प्रिया तुम कैसे जात विसारीजी॥
आज आय सुख ले हैं निश हम तुम्हरे धाम पियारीजी॥
चली सदन मुसकाय सुन्दरी अति मन हर्षित ग्वारीजी॥
लखि सुखपायो श्याम मुदित निज भवन गये बनवारीजी॥१॥
चंद्रावली मगन मनमाई कहती काउअ नाईजी॥
भये अस्त रवि निशि नियराई लखि उडुगण हरषाईजी॥
हरि सुखमाके भवन सिधाये चंद्रावलि विसराईजी॥
सूने घर देखी सो ग्वारी तहां गये सुखदाईजी॥२॥

दोहा–सुखमा देखत श्यामको, हरषभई मन ग्वारि॥
अति आदर हरिको कियो, बैठारे बनवारि॥

चौबोला–बैठारे बनवारिं नागरी रस वश किये कन्हाईजी॥
हाव भाव मोहे गिरिधारी रहे श्याम सुख पाईजी॥
चंद्रावलिकी सुरति भुलाई भये प्रेमवश माईजी॥
इत चंद्रावलि सेज सँवारे पुनि पुनि पंथलखाईजी॥१॥
कबहुँ भवन कबहूं अँगनाई कबहुँ द्वार टक लाईजी॥
कबहूं सोच करत मनमाई आवहिं गे कै नाईजी॥
कबहूं आलस कछु जियजानी धोवति नैन निकाईजी॥
कबहूं कहत हरि ऐ हैं मेरे अति मन हरष बढ़ाईजी॥२॥

दोहा–कबहुँ विरह व्याकुल जरत, रही अतिहि अकुलाय॥
बहु रमणी रमणीय पिय, कहति कबहुँ हरषाय॥

चौ०-कहति कबहुँ हरषाय अनत कहुँ बसे जाय सुखदानीजी
अवँधि बदी मोसों निश ऐ हैं कहा पुनि जियमें आनीजी॥
ऐसेहिं ऐसे रैन विहानी सुनि वार्यसकी बानीजी॥
भई काम दुख बाम जानके श्याम कपटकी खानीजी॥१॥

१ आनंद। २ सूर्य। ३ नियत समय। ४ कौआ।

कहाति बाम निज मनके माई बात श्यामकी चीनीनी ॥
श्याम नाम खोटे सब अलि अरु कोकिल श्याम प्रवीनीजी ॥
श्माम जलधि अहि श्याम विशेषी तिनकी करनी लीनीजी ॥
जानि परी मोहन यह मोसों प्रीति कपटकी कीनीजी ॥ २ ॥
दोहा–ऐसे मन अति क्रोध करि, भई विरह वश बाम ॥
बसे रैन सुखमासदन, मोहन सुन्दर श्याम ॥
चौबोला–मोहन सुन्दर श्याम प्रात उठि चले तहाँ अतुरायेजी॥
आलस भरे नैन रँग राते चंद्रावलि गृह आयेजी ॥
ठाढे अजिर रहे सकुचाई तब ग्वालिन लख पायेजी ॥
मन्दिर ते रिस भरी गुवारी नख शिख रूप लखायेजी ॥ १ ॥
मन मन कहति कुटिल अति गिरिधर बसे निसा कहुँ जाईजी॥
प्रात होत आये मेरे घर यह कहि अतिहिं रिसाईजी ॥
कियो मान मनमें अति प्यारी ठाढे अजिर कन्हाईजी ॥
और नारिके चिह्न विलोकी बढ़त रोष अधिकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तब बोली करि मानतिय, कहा काम ममधाम ॥
ताहीके घर जाइये, बसे जहाँ निशि श्याम ॥
चौबोला-बसे जहाँ निशि श्याम तहाँ तुम जावहु कुँवर कन्हाईजी
प्रात दिखावन मोहिं इताहिं अब आये रंग बनाईजी ॥
भले बने हो लाल आज छबि मैं लखि अति सुख पाईजी ॥
अधर दीप सुत रेख सुहाई पीक पलक छवि छाईजी ॥ १ ॥
लटपटी पाग महावर लाये आलस नैन सुहायेजी ॥
चंदन भाल मिल्यो कहुँ वंदन यह छबि अधिक बनायेजी ॥
जान्यो नागरि रंग भरे हो मोहिं दिखावन आयेजी ॥
सोंह करनको इत उठधाये जाउ तहीं मन भायेजी ॥ २ ॥
दोहा–हँसि बोले नँदलाल तब, तुम तजि प्यारि नकोय ॥

वसत सदा मनमाहिं तुम, इक क्षण न्यारि न होय ॥
चौबोला-इक क्षण न्यारि न होय कहतहो झूँठी बात बनाईजी ॥
चीन्हेंहो गुण राशि कन्हाई कहां सीखे चतुराईजी ॥
यह कहि गई भवनमें भामिन लखि रीझे सुखदाईजी ॥
सन्मुख जाय भये तहां ठाढे द्वारकपाट लगाईजी ॥ १ ॥
पौढ़ि रही तिय जाय सेजपर बदन मूंदि अनखाईजी ॥
हरि तन पुनि चितई नहिं सुन्दरि मन अति प्रेम बढ़ाईजी ॥
जो चाहै सोई हरि करहीं प्रभुगति जानि न जाईजी ॥
पौढी जहाँ मानकर नागरि तहँ पौढ़े सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—जो देखैं तौ संग हरि, चली बहुरि झहराइ ॥
निकरि अजिर ठाढी भई, तहांपुनि गये कन्हाइ ॥
चौबोला—तहां पुनि गये कन्हाइ नैनकी सैनन विनय सुनाईजी ॥
चकित भई देखत तब ग्वारी भीतर भवन सिधाईजी ॥
जब अंकम भरलई मुरारी तब सब रोष भुलाईजी ॥
चेटक करि वशकरी नागरी मान छुड़ाय रिझाईजी ॥ १ ॥
तियको सुख दीनो सुख पायो गये निज भवन कन्हाईजी ॥
चंद्रावलि बैठी तिहिं ठाई सखि दश पांचक आईजी ॥
औरे वदन और अंग सोभा निरखि रही टकलाईजी ॥
कहति आज कहा हरष बढ़ायो लूट कहूं कछु ल्याईजी ॥ २ ॥
दोहा—क्यों अंग सीथल मरगजी, यह छबि कहिय न जाइ ॥
हम जाने तोहिं हरि मिले, राखति बात दुराइ ॥
चौ०-राखति बात दुराइ चंद्रावलि करति कहा चतुराईजी ॥
भीजी श्याम सनेह सखिन सों ज्वाब देत कछु नाईजी ॥
वह लीला विसरत क्षण नाहीं रह्यो ध्यान उर छाईजी ॥
ज्यों गूंगो गुड खाय स्वाद कछु मुखते कह्यो न जाईजी ॥ १ ॥

तब बोली बूझति कहा आली मन मोहन सुखदाईजी ॥
है लीला अद्भुत सब जाकी बात कही नहिं जाईजी ॥
हाहा कहि चंद्रावलि हमसों हरि गुण कहो सुनाईजी ॥
कै तोहिं मिले यमुनके तीरे कै मिले सदन[1] कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तब चंद्रावलि हरष मन, हरि गुण कहे सुनाय ॥
सुनि हरिके सुन्दर चरित, रही सकल सुखपाय ॥

चौबोला—रहीं सकल सुख पाय प्रेम वश भई सो सब ब्रजनारीजी ॥
चंद्रावलि धनि धन्य हरी गुण कहति सबन सुखकारीजी ॥
नँदनंदन सब लायक हैंरी सुन्दर श्याम मुरारी[2]जी ॥
काहूके निशि बसे काहुको प्रातहि देत दिखारीजी ॥ १ ॥
काहूको मन आय चुरावैं काहूसों मन लावैजी ॥
काहूके जागत सिगरी निश काहुअ रिस उपजावैजी ॥
सब गोपी हरिके मनभावैं तैसेइ चरित उपावैजी ॥
यह लीला आनँदकी राशी सबरस सार सुहावैजी ॥ २ ॥

दोहा—भक्तन हित हरि करतहैं; गाय तरत संसार ॥
ब्रज युवतिनके संगहरि, घर घर करत विहार ॥

चौबोला—घर घर करत विहार हरीसों भक्तनके हितकारीजी ॥
विहारन सुयश श्रीगिरिधरको गावत वेद अपारीजी ॥
श्रीराधा वृषभानु दुलारी नन्दनँदनपिय प्यारीजी ॥
नन्दसुवन कहुँ अनतन जावै यह मनमाहिं विचारीजी ॥ १ ॥
नन्दभवन कै मेरे गेहा रहैं सदा मन लायेजी ॥
श्याम वसे काऊ नारीके प्रात होत तहाँ आयेजी ॥
चिह्न राति रंग अंग लखाये नैन अरुण[3] अलसायेजी ॥
प्यारी देखि रंग काउ तियको ऐसे वचन सुनायेजी ॥ २ ॥

---

१ घर। २ मुरदैत्यके शत्रु श्रीकृष्ण। ३ लाल।

दोहा–तब हँसि बोली राधिका, लखि हरि रूप अगाध ॥
तन धारो उपकारहित, पुरवन सबकी साध ॥
चौबोला–पुरवन सबकी साध कहो सुख दियोकौनकोजाईजी॥
धनि धनि यह उपकार जुकीनों धन्यबात मैं पाईजी ॥
धन्य मोहिं यह दरश दिखायो धनि जहाँ प्रीति लगाईजी ॥
क्यों नहिं कहियत प्रगट बखानी राखत कहा दुराईजी ॥ १ ॥
अद्भुत छबि अभिराम आज मोहिं भली यहआयदिखाईजी ॥
उर कुच कुंकुमदाग कपोलन पीकलीक छबि छाईजी ॥
रँगी महावर पागमनोहर सोभा कहिय न जाईजी ॥
क्यों उठि भोर इहां तुम आये आवत लाज न आईजी ॥ २ ॥
दोहा–तुमहुँ भले अरु वह भली, दोउ मिल भलो मनाय ॥
इतनो हित जासों कियो, अब कत छोरत ताय ॥
चौबोला–अब कत छोरत ताय जाहुताहिं वे सुनिकै दुखपाईजी ॥
बहुरो तुमते मन न मिलैहों तब रहिहो पछिताईजी ॥
तिनहीं को सुखदीजै मोहन निश विलसे जहाँ जाईजी ॥
तिय सन्मुख नहिं लखत कन्हाई रहे मनहिं सकुचाईजी ॥१॥
कबहुँ चरण नख भूमि उखारैं नैनन कोर लखावैजी ॥
खंडित वचन सुनत हरषाई प्रगट त्रिसत सकुचावैजी ॥
पियको सुख प्यारी नहिं जाने अधिक रोष मन ल्यावैजी ॥
जाहु जाहु पिय कहति सदनते कहति सोई मन आवैजी॥ २ ॥
दोहा–तुम जानतहो निज मनहिं, हमहिं चतुर ब्रज माहिं ॥
अरु ये ब्रजके लोग सब, सो कछु जानत नाहिं ॥
चौबोला–सो कछु जानत नाहिं लाल तुम हम अयान ठहराईजी॥
रैन वसत कहुँ भोर हमारे आवत लाज न आईजी ॥
तबहिं श्याम सुन्दर मृदुवाणी बोले अति सकुचाईजी ॥

कौने लख्यो कह्यो किन आई झूँठी बात बनाईजी ॥ १ ॥
ये सब झूँठी बात बनावैं खोटी सब ब्रजनारीजी ॥
सौंह करों जो कहौ लाडिली तुमते और न प्यारीजी ॥
कत वचनन कहि दाहत हीयो बोलै रहो मुरारीजी ॥
ये सब झूँठी ब्रजकी नारी सांचे तुमहिं विहारीजी ॥ २ ॥

दोहा–सौंह करतहो लाल अब, जानपरी चतुराइ ॥
लोक वेद मर्याद तजि, लाज छुड़ावन चाइ ॥

चौबोला–लाज छुड़ावन चाइ पीयसों ऐसे झगरति प्यारीजी ॥
आई तहां और ब्रजनारी देख रही सब ग्वारीजी ॥
तिन्हें कह्यो सैननमें प्यारी देखहु छबिहि निहारीजी ॥
युवति विलोकति छबि अधिकाई मौन रहे बनवारीजी ॥ १ ॥
कहति सखी यह छबि कहां पाई कहो न कुँवर कन्हाईजी ॥
कहति प्रिया करें सौंह लखोरी अंग चिह्न छबिछाईजी ॥
दरशन देन प्रात इत आवत वसत निशा कहुँ जाईजी ॥
कृपा करो अब वेग सिधारो जहां तुम प्रीति लगाईजी ॥ २ ॥

अथ मध्यम मानलीला।

दोहा–जाहु जाहु कहि क्रोध करि, इहां न तुम्हरो काज ॥
लखि प्यारी अति क्रोध मन, सोच रहे ब्रजराज ॥

चौबोला-सोच रहे ब्रजराज लाडिली देखी रोष कन्हाईजी ॥
अरु सखियनकी भीर देखि तब गये द्वार सुखदाईजी ॥
भरे विरह आनंद मगन रस सोच रहे उरमाईजी ॥
डरत मनहिं मन डर प्यारीके जाय सकत कहुँ नाईजी ॥ १ ॥
जबहीं श्याम गये द्वारे तन प्यारे रिस अधिकाईजी ॥
कहति सखिन सों देखहु तुम पुनि दोष देति मुहि आईजी ॥

ऐसे श्याम गुणनके आगर चोरत चितहि कन्हाईजी ॥
जान देहु अब इहां न आवै ऐसे कहि रिसहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–इहां काज उनको नहीं, ऐसे सखिन सुनाइ ॥
जाउ तुमहुँ अपने सदन, यों कहि भवन सिधाइ ॥
चौबोला–यों कहि भवन सिधाई नख शिख रोष भईपियप्यारीजी
जोबन रूप गर्व उरधारी चली घरन ब्रजनारीजी ॥
गई सखी वह दशा निहारी देखे द्वार विहारीजी ॥
कहति सुनो मोहन पिय तुमसों प्रियारोष भइभारीजी ॥१॥
प्यारी रोष कियो अति तुमपर हम सब घरन पठाईजी ॥
अटपट रूप दिखाय तुमहि यह कहाकीनी चतुराईजी ॥
तुम्हरे आवत अतिहिरिसाई भीतर भवन सिधाईजी ॥
भये चकित अति गये झुराई सुनतहि कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तब सखियन हरिसों कह्यो, चतुर कहावतनाम ॥
करत फिरत ऐसे गुणन, अब कच्यात कत श्याम ॥
चौबो०–अब कच्यात कत श्याम लाडिली तुमहीं जानरिसाईजी
अटपट रूप दिखाय कहूँते आये रंग बनाईजी ॥
प्रथम विचार कियो तुमनाईं अब पछितात कन्हाईजी ॥
यह सुनि धीर कियो सुखदाई . युवती एक बुलाईजी ॥ १ ॥
तासों कहि सब बात जनाई दूती ठान पठाईजी ॥
वेगि मेट जियमान सयानी यह तोहिं कह्यो कन्हाईजी ॥
ऐसे मन मन कहत दूतिका श्रीराधा ढिंग आईजी ॥
प्यारी मान ठानकर बैठी उर अति रोष बढाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सौति शाल शालतहिये, रह्यो सोच उरछाइ ॥
नाहिं बोलत हेरत नहीं, नेकु न अंग हिलाइ ॥
चौबोला–नेकु न अंग हिलाइ दूतिका बात कछू नाहिं पावेजी ॥

बिना भीत कहां चित्र बनावे कछु मुख वचन न आवेजी ॥
अति आतुर मुहिं श्याम पठाई ऐसे मन पछितावेजी ॥
यह इत उत कहुँ नाहिं निहारे कहा कहुँ कहिय न जावेजी॥ १॥
यह विचार ठहराय मनहिं मन कहति दूतिका नारीजी ॥
मान कियो वृषभानुदुलारी कहा जियमाहिं विचारीजी ॥
उनकी बात आज मैं चीन्हें कहत सखी सों प्यारीजी ॥
ऐसेमें उनको नहिं जाने गुणन भरे गिरिधारीजी ॥ २ ॥

लावनी ।

अब कैसे उनसों मन मानें डोलत ब्रज घर घर जावे ॥
लाज न आवे भोर भये दरश देन इतको धावे ॥
टेक–जित चाहो तित फिरो कन्हाई मैं अपने मन यह आनी॥
इहाँ न आवे राज करो ब्रजमें वे हरि सुखदानी ॥
दूती सुनि प्यारीकी बानी भीतर प्रेम भरी जानी ॥
कहति दूतिका अबहिमैं यमुनाते ल्यावति पानी ॥
सखि इक कह्यो आजु भइ ऐसे को अब इनकोसमुझावै॥
लाज न आवै भोर भये दरश देन इतको धावै ॥ १ ॥
तब मैं रहि न सकी घर माई सुनत तुरत इतको धाई ॥
भली प्रकृति श्यामकी परी नहीं यह दुखदाई ॥
अब द्वारेते हरि न टरैरी पर घर जात न सों खाई ॥
मन पछितावै भूल असो कबहूँ करिहों नाई ॥
अब ससुझे अरु हम समुझावें परघर जान नहीं पावे ॥
लाज न आवै भोर भये दरश देन इतको धावै ॥ २ ॥
यहै कहन तोसों मैं आई तू जिन मान तजै प्यारी ॥
परत लखाई कहूँ अब जात नहीं वे वनवारी ॥

जब दूती यों बात बखानी जाने द्वारे गिरिधारी ॥
उमगतहीयो मिलनको ऊपर रोष रही धारी ॥
काहेको हरि द्वार खरेरी क्यों नाहिं अपने घर जावै ॥
लाज न आवे भोर भये दरश देन इतको धावै ॥ ३ ॥
लई तीयके जान हियेकी चतुर दूतिका मन भाई ॥
गई श्यामपै कहति कछु बात और औरै लाई ॥
काहि मनाऊँ सुनहु कन्हाई नेकुमरम में नाहिं पाई ॥
दीठ न जोरै लाड़िली सूधे मुख बोलत नाईं ॥
विहारन मैं कहि कहि समुझाई वह न कछू मनमें ल्यावै
लाज न आवै भोर भये दरश देन इतको धावै ॥ ४ ॥

दोहा—नेकु नहीं उत्तर कहै, मुखते करै न बात ॥
रही मौन गहि लाडिली, अति रिस कंपत गात ॥

चौबोला—अति रिस कंपत गात कहींमैं सो तो सुनहु कन्हाईजी
भई बूंद वारुदकी नाईं रह्यो नैन जल छाईजी ॥
नहीं डरत बैठी मुख मोरे तिरछी भौंह तनाईजी ॥
ऐसी है यह दीठ तुम्हारी तासों नाहिं बसाईजी ॥ १ ॥
सुनहु रसिक बर हरि सुखदाई आपहि लेहु मनाईजी ॥
यह सुनि विरह भरे बनवारी मुरछि परे सुधि नाईजी ॥
यों कत विकल होत बलिहारी लीने सखी उठाईजी ॥
धीर धरो सुख पावत हो जू नागर नवल कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—नेक बात गहि पायहो, तुमहिं मिलैहों लाल ॥
धीरज दे वन श्यामको, दूती गई उताल ॥

चौबोला—दूती गई उताल जाय कह्यो सुनहु राधिका रानीजी ॥
प्यारे श्याम वेहाल लाडिली मुख नाहिं बोलत वाणीजी ॥
तेरे विरह भये अति व्याकुल नैनन डारत पानीजी ॥

कहा कहूँ न सँभार कछू तन चलि सुख देहु सयानीजी ॥ १ ॥
और नहीं कोऊ तो रसकी तू हरिके मन भावैजी ॥
तेरे रस वश कुँवर कन्हाई तेरे विरह कुम्हिलावैजी ॥
तेरे चितवन के चेरेरी तेरोइ रूप लखावैजी ॥
तेरे रंग वसन तन धारे तोरँग तिलक लगावैजी ॥ २ ॥

दोहा–चन्द्रवदन तेरो लख्यो, मोहन श्याम सुजान ॥
मोरचन्द्र शिर मुकुट करि, धरयो ताहिते कान्ह ॥

चौबो०-धरयो ताहिते कान्ह राधिका अति अनुराग मुरारीजी
कर विचार नीकेमैं हेरयो मानहु बात हमारीजी ॥
जो जाको नीके कर जाने सो ताको हितकारीजी ॥
यहै प्रीतिकी रीति पियारी बोल लेहु गिरिधारीजी ॥ १ ॥
तू कहां गई कहन कहा आई तोहिंको श्याम पठाईजी ॥
मानत कौन कही अब तेरी जान लई चतुराईजी ॥
जिन्हे परी यह बान तिनहिं सों मिलहिं कौन अब जाईजी ॥
मन में राखत आन कहत कछु आनहिं बात बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बहु नायक पूरे गुणन, हैं वे कपट निधान ॥
जिन बावन ह्वै बलि छल्यो, सो जग करत बखान ॥

चौबोला–सो जग करत बखान हरीकी महिमा कही न जावेजी ॥
देख विचार हिये अपनेरी मान किये कहा पावेजी ॥
जाके गुण गण सुर मुनि मोहे सो तेरे गुण गावेजी ॥
सनकादिक जेहि ध्यान लगावे सो तो दरश न चावेजी ॥ १ ॥
शिव विधि जाके द्वार खरेरी सोतो द्वार सुहावेजी ॥
जाके पद कमलाकर लीने सो हरि तो पद ध्यावेजी ॥
अति आतुर नँदलाल हियेरी शीश छिये सोंह खावेजी ॥
सुनि प्यारी अति हठ नाहिं कीजे वृथा क्रोध जिन ल्यावेजी ॥ २ ॥

दोहा–यह जोवन वरषा सलिल, गर्व नकीजै बाम ॥
सब सुख हरिके सँगकिये, अबकत बिछुरतश्याम ॥

चौबोला-अबकतबिछुरतश्याम लाडिली जीवनप्राण हमारोजी
कृष्ण विमुखकै कालजियेरी क्यों मनमें न विचारोजी ॥
भामिन मान कह्यो कर मेरो पूरव सुकृत तुम्हारोजी ॥
भीजहु हरिके रस रँग माई सुन्दर रूप निहारोजी ॥ १ ॥
तू अति परम सुजान सयानी हरिसों मान न कीजैजी ॥
उठति बैसके दिनरी प्यारी वृथा जान नहिं दीजैजी ॥
मैं जु कहत तेरे हित केरी हरि संग हिलमिलरीजैजी ॥
परे द्वार तेरे गिरिधारी बोलि भवन में लीजैजी ॥ २ ॥

दोहा–सोई चतुर सुलक्षणी, वसतपीय जिय माहिं ॥
योवन गुण दुति पीय हित, तो समान कोउ नाहिं ॥

चौबोला–तो समान कोउ नाहिं राधिकातूअतिपियकी प्यारीजी
तेरे हित मोहन बनवारी बोल लई ब्रजनारीजी ॥
कियो बुलाय रास नन्दलाला वृन्दावनहि मझारीजी ॥
तूतन श्याम प्राणरी प्यारी परछांई हम सारीजी ॥ १ ॥
तेरे रूप समान ब्रजहिमें और तीय कोउ नाईजी ॥
कहाभयो री वे बहुनायक सुन्दर श्याम कन्हाईजी ॥
शशिहि कहाडर कुमुदनीको जो तू मन गरवाईजी ॥
ऐसे जबदूती समुझाई तब बोली मुसुकाईजी ॥ २ ॥

दोहा–वेधति ऐसे वचन शर, वकति बादही आय ॥
उतकी इत इतकी उतहि, मिलवत बातबनाय ॥

चौबोला–मिलवत बात बनाय सखी तू इतउत आवै जावैजी ॥
जो चहिहैं तो आपुहि ऐहैं हाहाकरि सौंह खावैजी ॥

प्रीति रीति कछु जानत नाईं कहत सोई मन आवैजी ॥
जब प्यारी ऐसे कहि वाणी तब सखि वचन सुनावैजी ॥ १ ॥
मानति नाहिं लाडिली प्यारी कहति सखी मुसकाईजी ॥
श्याम मिलाऊं आनि तोहिं अब मनत न मेरी मनाईजी ॥
मैं जानी तब मानिहो प्यारी श्याम मनावै आईजी ॥
अरी मान वे बहुते तेरे विरह विकल सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा-जबलगि मैं जाऊं वहां, ऐसेहि रहियो बाम ॥
यह छबि हरिः दिखायहों, लखि सुख पैहैं श्याम ॥

चौबोला-लखि सुख पैहैं श्याम यह कहि चली श्याम पैआईजी
कहाति सुनो मोहन पिय प्यारी मैं बहुभाँति मनाईजी ॥
मानति नाहिं मनाई प्यारी कहाधरी जियमाईजी ॥
हाहा करि मैं बहु समुझाई सुनत अधिक रिसहाईजी ॥ १ ॥
आपहि चलिये लेहु मनाई और उपायहि नाईजी ॥
वहै वयार जैसिये जबहीं पीठ आडिये ताईजी ॥
मोसीं जो पठवहु तुम कोटिन मनत न प्यारि मनाईजी ॥
होंतो कहति तुम्हारे हितकी वाकें चितकी पाईजी ॥ २ ॥

दोहा-चले बनत है लाल अब, और यत्न नाहिं कोइ ॥
काछकाछिये जो हरी नाचनाचिये सोइ ॥

चौबोला-नाचनाचिये सोइ श्याम अब सुनहुश्री ब्रजराजैजी ॥
बड़े कहिगये बात यहै हरि आपकाज महाकाजैजी ॥
विनती करि हरि मिलहु तीयसों तजहु श्याम उरलाजैजी ॥
चलहु वेगि प्यारी ढिग मोहन देखत सब दुखभाजैजी ॥ १ ॥
सखी संग तब नवल विहारी गये भवन जहाँ प्यारीजी ॥
आगे भये सकुचके ठाढे हृदय प्रेम अति भारीजी ॥
चित्र लिखेसे मुख नहिं बोलें नेक न हलत मुरारीजी ॥

यदपि लाजगाढे अति जियके तदपि सयान विसारीजी ॥ २ ॥
दोहा–प्यारी जान्यो पियलखी, मोते डरे कन्हाइ ॥
अति आनँद मनमें भयो, चुपहि रही मुसकाइ ॥
चौबोला–चुपहि रही मुसकाइ कहति मन देउँ मान उचटाईजी
आदर करि पियको बैठाऊं यह प्यारी मन आईजी ॥
मोसों श्याम बहुत सकुचे अब जात न धाम पराईजी ॥
सहचरि कह्यो देखरी प्यारी कबते ठढे कन्हाईजी ॥ १ ॥
मान मनाई प्यारी पियके तू पियमन अति भाईजी ॥
प्राणहितनाहिं रूसबो कैसे भयो सुन्यों कहुँ नाईजी ॥
करि आदर बैठार पीयको हँसिले कंठ लगाईजी ॥
घर आये मिल लीजे प्यारी ऐसी कत सकुचाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मनमें ऐसी कहा धरी, है तू नागरि बाम ॥
तू मुखते बोलति नहीं, वे ठाढे हैं श्याम ॥
चौबोला–वे ठाढे हैं श्याम सुनतही कहति प्रिया मुख बानीजी॥
अबकी चूक नहीं मैं मानी पुनि रहियो अब जानीजी ॥
मेरी सोंह करोमो आगे तब बोले सुखदानीजी ॥
कह्यो सोंह करि मोहन तबहीं जात न धाम विरानीजी ॥ १ ॥
नंद भवनते अबहीं आयो देखी तुम रिस भारीजी ॥
अबलोंकी करनी जिन खोलो तब हँसि बोली प्यारीजी ॥
अब जु कालिहते अनत सिधारो तुम जानो गिरिधारीजी ॥
तब हरि हँसि कर शिर परराखे सोंह करी बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा–सोंह करी नँदलाल अब, कहति प्रिया मुखभाखि ॥
सखी आज ते बात यह, तू अब रहियो साखि ॥
चौबोला–तू अब रहियो साखि सखी सों कहत राधिका रानीजी
आई तहां और ब्रजनारी आदर सब सनमानीजी ॥

हँसे श्याम श्यामा मुसकानी सोंह करी सब जानीजी ॥
दिये पान हरिको तब प्यारी लिये श्याम सुखदानीजी ॥ १ ॥
भरी प्रेम आनंद सखिनसों कहत लाडिली प्यारीजी ॥
तुमहूं सब मिल कहो साह अब भये श्याम बनवारीजी ॥
लखि लखि सखी सिहात युगल छबि राधा अरु गिरिधारीजी॥
बसे श्याम तहां रात प्रात उठ चले सदन सुखकारीजी ॥ २ ॥

दोहा–चले धाम निज श्याम तहां, लखे द्वार नँदराइ ॥
सकुच फिरे घरजात गये, प्रमुदा सदन कन्हाइ ॥

चौबोला-प्रमुदा सदन कन्हाइ गये हरि लखि प्रमुदा सुखपाईजी
कहति लाल यह ख्याल तुम्हारे कित मग गये भुलाईजी ॥
कहां हुते गवने कितमाईं दरशहु देतहो नाईंजी ॥
फिरत कहां हो लाल भुलाने रहे हमें विसराईजी ॥ १ ॥
कहो कहा हो कछू डरेसे आलस अंग सुहायेजी ॥
बसे कहूं निशि तिय संग जागे नैन अरुण छबि छायेजी ॥
रसमसे गात शृँगार बनाये डगमगात इत आयेजी ॥
अंग अंग शोभाके सागर धनि धनि दरश दिखायेजी ॥ २ ॥

दोहा–विहँसि चले कहि श्याम तब, तरक करी तुम बात ॥
समुझी सब हम आय हैं, आज तुम्हारे रात ॥

चौबोला–आज तुम्हारे रात आय हैं सुनि हरषीं तब नारीजी ॥
पुलक गात आनँद उरभारी ऐ हैं आज मुरारीजी ॥
सांझ परे मेरे घर ऐहैं यह मनरही विचारीजी ॥
प्रातहिते मन हरष बढ़ायो नोसत साज सँवारीजी ॥ १ ॥
बार बार दर्पण मुख देखे भूषण वसन सजाईजी ॥
मांग सुधारत दधिसुत श्रेणी वेणी अहि छबि छाईजी ॥
धनपति पुरको नाम सुधारे दृगन दीप सुतलाईजी ॥

हीरावलि उर परले धारे श्याम मिलन मन माईजी ॥ २ ॥
दोहा–रचि रचि सेजसजात तब, नाना सुमन लगाय ॥
केसर चन्दन अरगजा, विविध सुगंध मिलाय ॥
चौबोला–विविध सुगंध मिलाय नागरी निजकरसेजबनाईजी ॥
बहुनायक नंदसुवन अनत कहुँ गये याहि विसराईजी ॥
वासर ऐसे करत विहानो निसायाम इक आईजी ॥
श्याम न आयें कहा धों जानी शोच विरह अकुलाईजी ॥ १ ॥
अजहुँ नहीं आये मनभावन कहति मनहिं मन नारीजी ॥
गये सांझहीको कहि आवत नहिं आये गिरिधारीजी ॥
किधों परे कहुँ फंद पराये कै आवत बनवारीजी ॥
वैवहु रमणी रमण विहारी कै मम सुरत विसारीजी ॥ २ ॥
दोहा–कुमुदाके घर हरि रहे, बढ़्यो अधिक उर हेत ॥
भीजे दोऊ प्रेम रस, अरस परस सुख लेत ॥
चौ०-अरस परस सुख लेत श्याम सँग मुदित वाम सुख पाईजी ॥
क्षण सम बीतत रात याहि वहां युग सम रैन विताईजी ॥
वैसे वहां याहि यह रीती ऐसेहि भोर है आईजी ॥
मनहीं मन युवती पछिताई करी श्याम कुटिलाईजी ॥ १ ॥
गयो मदन दुख बदन झुराई रही बैठ घरमाईजी ॥
आई तहाँ सहज इक आली देखि विकल पछिताईजी ॥
लोचन कमल भरे जल डाहे मनमारे मुरझाईजी ॥
कहा भयो तोकोरी आली बूझति सों ढिग जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–विकल होत मेरो तनहिं, ऐसे देखत तोहिं ॥
कहा भईरी बातसो, कहत नहीं किन मोहिं ॥
चौबोला-कहत नहीं किन मोहिं भई सोइ कहो न बात सयानीजी॥
तब बोली मधुरे तिय वाणी पोंछ नैनको पानीजी ॥

कहा कहों तोसोंरी आली जो हरि मोसों ठानीजी ॥
गये मोहिं कहि आवन मोहन पुनि उन कहा जिय आनीजी॥ १ ॥
मोसों अवधि वदी उन माई रहे अनत कहुँ जाईजी ॥
कियो नहीं मेरे घर आवन तबते मैं पछिताईजी ॥
ऐसे गुण हरिकेरी आली कपट निधान कन्हाईजी ॥
मोसों कपट कियो उन आई झूँठी बात बनाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मेरी सों कहियो उन्हें, तोहिं मिले जो आज ॥
वचननके सांचे वड़े, गहो कछू उर लाज ॥
चौबोला—गहो कछू उर लाज कन्हाई यह कहियो समुझाईजी ॥
उन्हें कछू मैं गई बुलावन आये आप कन्हाईजी ॥
मोपै कृपा आय यह कीनी कहो तोहिंसों माईजी ॥
काल्ह कहूँ जागे तिय गोहन जातहुते घर माईजी ॥ १ ॥
देखे नन्द द्वारही ठाढे सकुच फिरे इत माईजी ॥
डग मग पग दृग नींद भरेरी पुनि पुनि लेत जम्हाईजी ॥
जब मैं कहो कहांते आये तब वे रहे मुसकाईजी ॥
उत्तर मोहिं दियो कछु नाईं करी श्याम चतुराईजी ॥ २ ॥
दोहा—ऐहैं तुमरे धाम निश, यों कहि मोहिं सुनाहिं ॥
मैं जोवंत मग निश गई, मोघर आये नाहिं ॥
चौबोला—मोघर आये नाहिं कहतही आये द्वार विहारीजी ॥
भीतरते लखि हरिको ग्वारी भई रोष मन भारीजी ॥
देखतही रिसमें झहरानी कहति सुनो बनवारीजी ॥
धन्य धन्य यह घरी आज मम आये धाम मुरारीजी ॥ १ ॥
मुरि बैठी रिस गात नागरी ऐसे कहि गहि मौनैजी ॥
आये मोहिं खिजावन उठ इत धरत जरेपर लोनैजी ॥

१ घर-पास। २ लज्जित। ३ आँखें। ४ देखत।

चतुर नारि संग जागे सब निश आये हैं करि गौनैजी ॥
फिरत कहा कोऊ बहि ऐसे इनसों मिलि है कौनैजी ॥ २ ॥

दोहा–कृपा करहिं नँदलाल अब, जिन आवहु मम धाम ॥
उतहिं जाहु सुख पात जहाँ, जाहु जाहु तहँ श्याम ॥

चौबोला–जाहु जाहु तहँ श्याम कही खिज देखे बहुरि कन्हाईजी
जागे कहुँ निशि संग बामके चिह्न सोई लखि पाईजी ॥
कहुँ चन्दन कहुँ वंदन रेखा कहूँ पीक छवि छाईजी ॥
लखि स्वरूप हरि तन मुसकाई कियो मान अधिकाईजी ॥१॥
मन मन सोचत कुँवर कन्हाई परे तीय फँद आईजी ॥
मेरो नाम सुनतहीं ऐंटी देखत मोहिं रिसाईजी ॥
तबहीं श्याम करी चतुराई सैनन सखी बुलाईजी ॥
सोकहि चली जात घर माई तू बैठी अनखाईजी ॥ २ ॥

दोहा–अनतहि हरि ठाढे भये, तहाँ सखी चलिआय ॥
निरखि बदन मोहन हँसे, सखी कह्यो मुसकाय ॥

चौबोला-सखी कह्यो मुसकाइ लाल तुम कहा कियो यह आईजी॥
तब हरि कह्यो सखी तू जाघर मैं अब लेहुँ मनाईजी ॥
यह सुनि विहँसि चली कहि आली लेहु मनाय कन्हाईजी ॥
रसिक शिरोमणि कुँवर कन्हाई विद्यामणि सुखदाईजी ॥ १ ॥
आपहु गये तहाँ ते मोहन तियको दरश दिखाईजी ॥
फिर चितई द्वारे तन गोरी तहाँ देख्यो कोउ नाईजी ॥
भयो सोच अधिकी उरमाईं लखे न द्वार कन्हाईजी ॥
जब जानी फिर गये श्याम तब रही बाम पछिताईजी ॥ २ ॥

दोहा–भई विरह व्याकुल सखी, रही सोच मनमाहिं ॥
मिथ्यो मान उर अति दुखी, भली करी मैं नाहिं ॥

चौबोला—भली करीमैं नाहिं कहति पन मोहिं कहा मति आईजी
आवतही हरि सों झहराई घर आये सुखदाईजी ॥
भीतरलों आवन नहिं दीने भयो क्रोध दुखदाईजी ॥
ज्योंत्यों करि मेरे घर आये मैं देखत रिसहाईजी ॥ १ ॥
बार बार ऐसे पछिताई रही मसोसा खाईजी ॥
श्याम गये निहचै जब जानी यमुना न्हान सिधाईजी ॥
अति व्याकुल मन कछु न सुहाई संग सखीन बुलाईजी ॥
पहुँची यमुना तुरतहि न्हाई चली बहुरि अतुराईजी ॥ २ ॥

दोहा—मारगमें ठाढे भये, बाल स्वरूप बनाय ॥
पांच वरसके बन हरी, कहत सखी सों आय ॥

चौ०—कहत सखी सों आय मगहिमें और नहीं तहाँ कोईजी ॥
कहां जात हैरी तू नारी श्याम बुलाई तोईजी ॥
बनहिं बुलाई कुँवर कन्हाई लेन पठायो मोईजी ॥
सुनत वचन चकृत भइ नारी रही बाल मुख जोईजी ॥ १ ॥
अति आनंद भयो उरमाई सुनतहि नाम कन्हाईजी ॥
विहारन प्रभुकी अद्भुत लीला अगम चरितको पाईजी ॥
करगहि लियो चली हरषाई बालकको गृह ल्याईजी ॥
कहत श्याम बनधाम बुलाई लेन पठायो याईजी ॥ २ ॥

दोहा—पूछों यासों भेद सब, कहा कह्यो घनश्याम ॥
अति आनँद उरमें भयो, भीतर लेगई बाम ॥

चौबोला—भीतर ले गई बाम तहाँ हरि कीनों चरित कन्हाईजी ॥
भये तरुण सुन्दर तिहिं काला भुज गहि हँसि उर लाईजी ॥
चकित भई नागरि सकुचाई छांड़ि देहु सुखदाईजी ॥
ऐसे चरित करत धनि धनि पिय यहि विधि नारि मनाईजी ॥ १ ॥
सुख दे गये सदन सुखदाई हरष भई मन ग्वारीजी ॥

रैन विरहतन ताप निवारी आति आनँद मन भारीजी ॥
यशुमति ढिंग बालक जिम बोले कहत चरित बनवारीजी ॥
निज गृह श्याम गये गिरिधारी विहारन तन मन वारीजी ॥२॥

अथ गुरुमानलीला।

दोहा–सुन्दर श्रीहरिकी कथा, आति विचित्र सुखखान ॥
कहत सुनत गावत गुणत, हर्षित संत सुजान ॥
चौबोला–हर्षित संत सुजान गुणन भरे ब्रजनायक सुखदाईजी
गये और गोपी गृह मोहन सुन्दर श्याम कन्हाईजी ॥
चली न्हान वृषभानु किशोरी सँग ब्रजनारि सुहाईजी ॥
जाके घर निश बसे कन्हाई ताहिं बुलावन आईजी ॥ १ ॥
ठाढी भई द्वारपर आई उत निकसे बनवारीजी ॥
औचक[1] मिले न जानत कोऊ रहे चकित दोउ भारीजी ॥
न्हान जानकी सुरत बिसारी फिरी सदनको प्यारीजी ॥
भई विकल तन अति रिस बाढ़ी रही निरखि सब नारीजी॥२॥
दोहा–रहगये ठाढे श्याम तहाँ, भये सोच वश आय ॥
जब देखे व्याकुल हरी, रही सखी समुझाय ॥
चौ०-रही सखी समुझाय उलटि भई सबही हरिकी घाईजी ॥
देके बांह प्रिया जहाँ ल्याई देखी बाम कन्हाईजी ॥
रिस हीके रस मगन किशोरी बैठी मान दृढ़ाईजी ॥
भई श्याम देखत मति भोरी चकित रहे अकुलाईजी ॥ १ ॥
सखियन कियो विचार सकल मिल व्याकुल लखि बनवारीजी
अब ये दोऊ मिलहिं जेहि विधि करिये सो उपचारीजी ॥
को सुनिहै कासों कहैं जाई अति अचेत रिस प्यारीजी ॥
परी रुठावन वान इन्हैं अब इतये धीरन धारीजी ॥ २ ॥

१ अचानक ।

दोहा–प्यारी ढिग आलीगई, ठाढे पौंरि कन्हाइ ॥
कहति मान कीनों कहा, न्हान जात फिर आइ ॥
चौबोला–न्हानजात फिर आइ लाडिलीकहा जियमांहिविचारीजी
तोहिं लखतहीरी सुखदाई अतिहि डरे बनवारीजी ॥
मुरछि परे धरणी अकुलाई तनुकी सुरति विसारीजी ॥
नेकहु चैन रह्यो नहिं हरिको भये विकल अति भारीजी ॥ १ ॥
बहुनायक वे तू नहिं जाने तिनसों कहा रिसावैजी ॥
बाँह गहो हरिको ढिग लावे वे अपराध क्षमावैजी ॥
गहत बाँह तुमहीं किन जाई मोसों कहा गहावैजी ॥
काल्ह सोंह मोसों उनकीनी आजहि परघर जावैजी ॥ २ ॥
दोहा–देखिचुकी उनके गुणन, निज नैनन सुखपाय ॥
तिन्हे मिलावत मोहिं अब, बाँह गहावत आय ॥
चौबोला–बाँह गहावत आय सखी सुन साँची तोहिं सुनाऊंजी॥
अब जोलों जीवन जिऊंरी हरिको नाहिं पत्याऊंजी ॥
सहूं विरहके शूल रिआली विरहताप जर जाऊंजी ॥
उनके पंथ न पीऊँ पानी हरिसों प्रीति न लाऊँजी ॥ १ ॥
मृगमद भूलि न अंग चढाऊँ अंजन दृग नहिं लाईजी ॥
हस्त बलै पट नील न धारौं नैनन घन न लखाईजी ॥
सुनौं न श्रवणन अलि पिक वाणी नीले तनन छुवाईजी ॥
सुनत प्रियाकी बात सुहाई ठाढे पौंरि कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हरिसों मान न कीजिये, सुन वृषभानु कुमारि ॥
नवल तुमहुँ नवलहि हरी, यह जीवन दिन चारि ॥
चौबोला–यह जीवन दिन चारि राधिका गर्व न कीजै प्यारीजी॥
क्षण क्षण ज्यों करको जल छीजै जात न लागै वारीजी ॥
नंद नँदन पिय सुख सुखकारी निश दिन रहो निहारीजी ॥

हतो प्रेम धन येतो प्यारी सो तू कहां विसारीजी ॥ १ ॥
कहति हती रूसों नाहिं कबहूँ तादिन तू यह मोईजी ॥
करिहैं हँसी प्रेमकी सोई सुघर नारि सुनि कोईजी ॥
मान कियो जो भावते प्यारी सो न भाववो होईजी ॥
उरते रिस वश प्रेम कहाँरी अंत भावतो सोईजी ॥ २ ॥

दोहा—पिय सनेह जो गाइये, लाख कह्यो किन कोय ॥
लियो प्रेम परच्यो जिनहिं, चतुर नारिहै सोय ॥

चौबोला—चतुर नारि है सोय लाडिली सुन वृषभानु दुलारीजी॥
तुम वे एक न दोय पियारी जलहि तरंग न न्यारीजी ॥
रस रूसबो ओसकन जैसो सो नहिं रहत सदारीजी ॥
तजि अभिमान मिलहिं पिय प्यारी मानहु बात हमारीजी॥१॥
चुप न रहत कहा कहति मनावन आई बात बनावनजी ॥
बहुत सखी घरआई याते पिछली सुरत दिवावनजी ॥
मोसों बात कहत हो काकी वे तुमरे मन भावनजी ॥
को उनकी यहां बात चलावै तुम पुनीत वे पावनजी ॥ २ ॥

दोहा—अवहूं कछु बाकी रही, जाहु घरन ब्रजनारि ॥
मोहिं मनावन आइहो, यह कहि रिस भइभारि ॥

चौ०-यह कहि रिस भइ भारि राधिका सखी श्याम ढिग आईजी
कह्यो जाय हरि सों हरषाई कहां भूले चतुराईजी ॥
मान तजत नहिं कुँवर किशोरी थाकी सकल मनाईजी ॥
वेग यत्न कछु कीजिये मोहन रचिये आप उपाईजी ॥ १ ॥
रच्यो दूतिका रूप तुरतही सुन्दर श्याम कन्हाईजी ॥
करातिय स्वांग अनूप गये जहां बैठी मान दृढ़ाईजी ॥
बैठे निकट सखी मिसजाई करत बात मनभाईजी ॥
वन घन श्याम धाम तू प्यारी बैठ रही रिसहाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मैं उतही अबही गई, तू न तहाँ लखिपाइ ॥
हरिकी दशा निहार तब, इतही को चलिआइ ॥
चौबोला—इतहीको चलि आइ लाडिली देखे कुँवर कन्हाईजी ॥
इकले ठढे गहे द्रुमडारी अति आरत मनमांईजी ॥
तेरोइनाम रटत मुखराधा और कछू सुधि नांईजी ॥
चलतू होय नेकढिंग ठाडी देखहु नैन न जाईजी ॥ १ ॥
कुंजभवन ठाढे दोउ देखो राधा अरु गिरिधारीजी ॥
तब मैं नैन सफल करिलेखों मानहु अरज हमारीजी ॥
अब हरि कहत दंड मुहिं दीजै जोचाहो सो प्यारीजी ॥
हठतजि हाहा कुँवरि किशोरी अति दुःखित बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा—तुम कारणरी राधिका, पांय परत मम श्याम ॥
करि अपराध हरिके क्षमा, दे सुख चलि बनधाम ॥
चौबोला—दे सुख चलि बनधाम किशोरी मैं लागततुमपाईजी ॥
उन्हें जानि मोसों करि सोई जो तुमरे मनमांईजी ॥
क्षण क्षण परसत चरण करनते क्षण क्षणलेत बलाईजी ॥
कहत मान अब तजहु लाडिली पुनि पुनि हाहाखाईजी ॥ १ ॥
चरित ललित नँदलाल हरीके लखि लखि सखी सिहाईजी ॥
भरी प्रेम आनंद मगनरस मनहीं मन हरषाईजी ॥
तब चितयो प्यारी नैनन भर कछु हरि अंग लखाईजी ॥
श्याम अजहुँये गुण नहिं छांड़त लावत हो चतुराईजी ॥ २ ॥
दोहा—इन छंदन मानो नहीं, जानति तुम्हें कन्हाइ ॥
रसबादिन मोको करी, वे सब देहु भुलाइ ॥
चौबोला—वे सब देहु भुलाइ श्याम अब जान लई चतुराईजी॥
यह कहि बहुरि भई रिसहाई रहे श्याम सकुचाईजी ॥
फिर पोढी दै पीठ श्यामको हृदय दुखित अधिकाईजी ॥

रिस वश धरत नहीं मन धारे विरह पीर अति छाईजी ॥ १ ॥
जिते जिते मुख फेरत प्यारी तितहिं जात सुखदाईजी ॥
जोइ जोइ बात प्रिया मन भावे सोइ सोइ कहत कन्हाईजी ॥
करि हारे छलछंद हरी सब छूव न पावत छाईजी ॥
हठ नाहिं छांडत कुँवरि किशोरी सोचत हरि मन माईजी ॥२॥

दोहा—विरह विवश प्यारी निकट, देखि श्यामको दीन ॥
तब समझावन सब लगीं, सखियां परम प्रवीन ॥

चौबो०-सखियां परम प्रवीन कहति सब लखिरी नवल विहारीजी
कबके हाहा करत कन्हाई पाँयन परत मुरारीजी ॥
तेरे भय तेरी मन मोहन रूप तीयको धारीजी ॥
मधुर मधुर वचनन सुखकारी तोहिं मनावत प्यारीजी ॥
हाहा करि अरु पाँयन लागे और कहा कियो चाईजी ॥
लखि हरि खड़े मिलन मुरझाये लै आदर बैठाईजी ॥
वेतो बनके भवँर विहारी तोसि बेलि अरुनाईजी ॥
करि सनमान विहँसि अब हरिको कहाधरी निठुराईजी ॥ २ ॥

दोहा—मान किये कहा पावही, आदर करि कहा खोय ॥
होत कहा घूंघट तजे, बोले ते कहा होय ॥

चौबोला-बोले ते कहा होय तिहारे ऐसी कहा जिय आईजी ॥
प्रीतमछाँडि राखिये वैरी यह तोहिं कौन सिखाईजी ॥
निज वश मदन गुपालहि जानी ऐसी कहा इतराईजी ॥
भली कहत तोहिं लगत अनैसी कहा कोऊ समुझाईजी ॥ १ ॥
जो नहिं मानति श्याम मनाये मानहिं करि रह जैहेजी ॥
जब दहि है रतिनाथ तोहिं तब तू पुनि मन पछितैहैजी ॥
मान प्रिया हम कहाति सकल मिल ऐसेको पुनिकैहैजी ॥
तीन भुवनको ठाकुर प्यारी सो निज वश कब ऐहैजी ॥ २ ॥

दोहा—यह जोवनरी राधिका, धन सपनेको जान ॥
ऐसो समय न पाय हो, पीय मनायो मान ॥
चौबोला—पीय मनायो मान किशोरी सुनि पाछे पछिताईजी॥
अब ये दिन रूसनके नाई सोच देखि मनमाईजी ॥
गरजत गगन भयो घन घेरो ऋतु पावसकी आईजी ॥
बोलत दादुर चातक मोरा चलत पवन पुरवाईजी ॥ १ ॥
बरषत मेघ भूमि हित लागी नारि पीय मन चाईजी ॥
जे बेली ग्रीषम ऋतु दहाई हुलसि तरुन लपटाईजी ॥
सरिता उमगित सिंधु समाई मिलत सुरसरी जाईजी ॥
भयो समय यह दिवस चारको करि सुख सँग सुखदाईजी ॥२॥
दोहा—सुनि सखियनके वचन बर, श्रीवृषभानु कुमारि ॥
उमगि प्रेम अति सुख भयो, ऊपर रिस रहिधारि ॥
चौ०-ऊपर रिस रहि धारि रिसहि करि कह्यो राधिकारानीजी ॥
रस करि हाथ विकाने जाके तहाँ जाहु सुखदानीजी ॥
सुख सों मेरो भलो मनावत रहत अनत मन मानीजी ॥
विरंद तुम्हारो लजत कन्हाई सांच वखानत वानीजी ॥ १ ॥
गहे रहत मन आन तियनके विहँसि कह्यो यों प्यारीजी ॥
विरह ताप तनको सब खोयो हरष भये बनवारीजी ॥
प्यारी मुख विहँसित तब देखी हरषि उठी सब नारीजी ॥
तब बोले हरि दोउ करं जोरी श्रीवृषभानु दुलारीजी ॥ २ ॥
दोहा—तूही हित चित प्राण धन, सदारटतमैं तोय ॥
पोषण तेरे वचन मम, तो सम और न कोय ॥
चौबोला—तो सम और न कोय लाडिली मैं तुम्हरी बलिजाऊंजी
तुम मम तिलक तुही आभूषण तुम देखत सुखपाऊंजी ॥

१ बाना। २ हाथ।

तेरोई गुण निशदिन गाऊं अब यह विनय सुनाऊंजी ॥
तजहु मान अब दोउ करजोरो चरणन शीश नवाऊंजी ॥ १ ॥
यह सुनि कछु प्यारी मुसकानी तब बोली ब्रजनारीजी ॥
सुनहु श्याम तुमहो रससागर रूपशील सुखकारीजी ॥
तुमते प्रिया नेक नहिं न्यारी एकहि देह तुम्हारीजी ॥
प्यारी मैं तुम २ मैं प्यारी दरपनछांह निहारीजी ॥ २ ॥

दोहा—रस में परे विरस तहाँ, होत अतिहिकठिनाइ ॥
अबके देत मनाय हम, परसहु चरण कन्हाइ ॥

चौबोला-परसहु चरण कन्हाइ श्याम तुम अब जोरुठावोप्यारीजी
राम राम तो बहुरि हमारी तुम जानों गिरिधारीजी ॥
तब परसे प्यारी पद हरषित परम प्रीतिं बनवारीजी ॥
छूट्यो मान हरषभइ प्यारी मिट्यो विरह दुखभारीजी ॥ १ ॥
प्रेम कसौटी कासि पियप्यारी उर आनंद बढायेजी ॥
मिली पिया उठि श्याम सुन्दरसों अवगुण सब विसरायेजी ॥
हरषि उठे दोउ प्रीतम प्यारी निरखि सखिन सुख पायेजी ॥
तब सखियन दोउ उबटि न्हवाये रुचिर शृंगार बनायेजी ॥ २ ॥

दोहा—नाना विधि व्यंजन किये, मधुर मिष्ट मनभाय ॥
दोउ अन अतिहित प्रेम करि, एकहि थार जिमाय ॥

चौ०—एकहि थार जिमाय दोऊ तब अचवनकर दिय प्यारीजी॥
लै वीरा अपने कर राधा दीयो विहँसि विहारीजी ॥
तबहिं सफल जीवन करजान्यो परम हरषि बनवारीजी ॥
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी आरति सखिन उतारीजी ॥ १ ॥
अरस परस दोउ रहे निहारी मन अति आनँद भारीजी ॥
पाये वश करि कुंजविहारी तब बोली हँसि प्यारीजी ॥
सुनहु श्याम बरषाऋतु आई रचहु हिंडोल मुरारीजी ॥

सब मिल झूलहिं संग तुम्हारे यह मन साध हमारीजी ॥ २ ॥

दोहा-सुनत वचन मुख तीयके, रहे श्याम सुख पाय ॥
राजत दोऊ अति मगन, ऐसे मान छुडाय ॥

चौ०-ऐसे मान छुडाय जनन हित कियो यह चरित मुरारीजी॥
निगम नेति अपार गुणन निधि सुखसागर गिरिधारीजी ॥
प्रेम सहित गावे जो हरिको मानचरित सुखकारीजी ॥
आदर मान करहिं सो तिनको श्याम सुन्दर बनवारीजी॥ १ ॥
राधा रसिक श्याम सुन्दरको मानचरित जो गावेजी ॥
भक्त जननको अति सुखकारी मन वाञ्छित फल पावेजी ॥
सुफल जन्म है तास अनूदिन गावत सुनत सुहावेजी ॥
जिनपर कृपा विहारन प्रभुकी तिनको यह रस भावेजी ॥ २ ॥

अथ हिंडोरावर्णन लीला ।

दोहा-भक्तन हित लीला करैं, भक्तनके सुखदाइ ॥
सदा भक्त वश सांवरो, करत भक्त मन भाय ॥

चौबोला-करत भक्त मन भाइ भक्त हित नाना चरित उपाईजी॥
प्रेम भक्ति दृढ़ ब्रजकी बाला तिनके वशहि कन्हाईजी ॥
जोई सुख सखियन मनभावै करत सोई सुखदाईजी ॥
समैं समैंके सुखद विहारा करत श्याम ब्रजमाईजी ॥ १ ॥
ग्रीष्म गत पावस ऋतु आई अति शुभ परम सुहाईजी ॥
श्री राधा मनकी रुचिजानी हरिजनके सुखदाईजी ॥
तब हिंडोल लीला मन आनी सुन्दर श्याम कन्हाईजी ॥
गये श्याम वृन्दावन में तहाँ यमुना तट छबि छाईजी ॥ २ ॥

दोहा-सखिन सहित श्रीराधिका, अरु श्रीनन्द किसोर ॥
अति आनंद चहुँ ओर छबि, घुमड़िरहे घनघोर ॥

चौबोला–घुमडिरहे घनघोर दामिनी दमक रही घनमाईजी ॥
गरजत मधुर श्रवण सुखदाई वहत समीरसुहाईजी ॥
नाना रंगन खिले फूल फल अति छवि बरनि न जाईजी ॥
गजमुक्तनके लगे झूमका मणिन जटित छबि छाईजी ॥ १ ॥
कनक बरन मय भूमि सुहाई छबि हिंडोर अति छाईजी ॥
तापर रसिक छबीले दोऊ उपमा को कोउ नाईजी ॥
नन्द नन्दन ब्रजभानुकिशोरी गौर श्याम सुखदाईजी ॥
मोर मुकुट पीतांबर सोहै सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–निरखत छबि नभ सुरसकल, नारिन सहितसिहाय ॥
चढे उमगि आनंद उर, सो छबि कही न जाय ॥
चौ०-सोछबि कही नजाय विराजत अति छबि युगलविहारीजी॥
प्यारी अंग वैजनीसारी चहुँदिस चारु किनारीजी ॥
युगल अंग भूषण छबि छाये रुचिर शृँगार सुधारीजी ॥
उर रत्नके हार विराजैं सुमन माल शुभकारीजी ॥ १ ॥
उत कुंडल इत तरवनकी दुति लखि छबि रवी लजावैजी ॥
सखि गण सब तृण तोरि निहारै तन मन वारिबहावैजी ॥
पिय प्यारीको हर्षि झुलावै ऊँचे सुख मिल गावैजी ॥
ताल मृदंग बांसुरी वीना बाजत सरस सुहावैजी ॥ २ ॥
दोहा–यह सुख सुनि ब्रजसुन्दरी, अपर सकल नव बाल॥
वृन्दावन झूलत युगल, राधा अरु नँदलाल ॥
चौबोला-राधा अरु नँदलाल झूलन सुनि चली सकल अतुराईजी
नव सत साज शृंगार सजाये गृह कारज तजि धाईजी ॥
मनमोहनके रस वश प्यारी चली मनहिं सुख पाईजी ॥
चुनिकरि पहरि चूनरी सारी अरुण किनारि सुहाईजी ॥ १ ॥
यूथ यूथ मिलि हरिपै आवैं तिन पिय निकट बुलावैजी ॥

आदर वचन सप्रेम सुनावै सबकी साध पुरावैजी ॥
एक न लेत निकट बैठाई एक न पींग चढावैजी ॥
गावति एक मल्हार सुहाई एकन एक बुलावैजी ॥ २ ॥
दोहा—युवति वृंद चहुँओर छबि, भूषण भीर अपारि ॥
बसन सुगंध नव बहु रंगन, सोभित सब ब्रजनारि॥
चौ०-शोभित सब ब्रज नारि हरी मुख लखि सब मनहिं सिहाइंजी
उमगि मनो छबि सिंधु तरंगा आनँद उर न समाईजी ॥
देत चाव भरि जब झकझोरा अति मन हरष बढ़ाईजी ॥
होत अधिक छबि बढत निहोरा सो छबि बरनि न जाईजी॥ १॥
ऊँचे मिलत द्रुमनसों जाई छुवत सुमन करलाईजी ॥
ज्यों ज्यों पींग बढत अति भारी त्यों त्यों प्रिया डराईजी ॥
राखि राखि कहति तब प्यारी सखियन सौंह दिवाईजी ॥
जब नाहिं सकत सँभारि तनहिं तब प्रीतमसों लपटाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तब हिंडोल राखति पकरि, हँसत परस्पर बाल ॥
पिय प्यारी अति रस भरे, करत चरित्र रसाल ॥
चौबोला—करत चरित्र रसाल एक उतरत एक चढत सुहावैजी ॥
सबके मनकी रुचि हरि राखत मधुरे वचन सुनावैजी ॥
कबहुँ अकेले झूलत मोहन सब युवती मिल गावैजी ॥
कबहूँ युवतिन देत चढ़ाई आपुन श्याम झुलावैजी ॥ १ ॥
कबहूं मुरली मन्द बजावे गावत कबहुँ विहारीजी ॥
बिच बिच देत कोकिला टेरी झुकिहि रहे घन भारीजी ॥
परत फुहारा मन्द श्रमहारी बहत पवन सुखकारीजी ॥
चातक पिय पिय रटत पुकारी राधा रटत मुरारीजी ॥ २ ॥
दोहा—ऐसे गोपिनसों हरी, करत केलि आनन्द ॥
हर्षि सुरन बरषत सुमन, कहि जै जै ब्रजचन्द ॥

चौ०-कहि जै जै ब्रजचन्द धन्य ब्रज सुरगण कहत सिहाईजी ॥
हमको द्रुम न किये विधि ब्रजमें यह सबके मनमाईजी ॥
भक्तन हित प्रभु अज सनातन ब्रह्म धरचो तनु आईजी ॥
करत ब्रजहिमें नित्य हरीसो कापै बरन्यो जाईजी ॥ १ ॥
नित लीला आनन्द ब्रजहिमें नित नव मंगल बधाईजी ॥
धनि धनि जिनके चितहि रहत नित राधा कुँवर कन्हाईजी ॥
हरिके चरित रसाल अनूपम जे सप्रेम सुन गाईजी ॥
विहारन तिनके निकट रहत हरि सदा भक्त सुखदाईजी ॥

अथ फागुनवर्णन लीला ।

दोहा-जै जै नित्यानन्द हरि, भक्तनके हितकार ॥
ब्रह्म रूप प्रभु अवतरे, नित नव करत विहार ॥

चौ०-नित नव करत विहार नित्य नव गिरिधर नंद कुमाराजी॥
नित्य रूप राधा ब्रज बामा नित नव रास विहाराजी ॥
नित्य मान खंडन व्यवहारा नित्य प्रेम अति भाराजी ॥
नित्यकुंज सुख नित्य हिंडोरा नित सुखसिंधु अपाराजी ॥ १ ॥
नित्य नवल हित हरि संग जोरी नित नव छवि दरशाईजी ॥
नित वृन्दावन घन सुखदाई रहत वसंत सदाईजी ॥
सदा सुमन नव पल्लव डारी मारुत मन्द सुहाईजी ॥
सदा मधुप मदमाते डोलैं कोकिल टेर सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा-सुनि सुनि नारि हृदय सुखी, मन अति हरष बढ़ाइ॥
बार बार कहि पिय सुनो, ऋतु वसंत अब आय ॥

चौ०-ऋतु वसंत अब आय पिया तुम सुनहु लाल गिरिधारीजी
फागुचरित तुम सँग सब खेलैं यह मन साध हमारीजी ॥
यों वनिता हरिसों हरषित कहि सुनो पिया सुखकारीजी ॥

देखहु वन शोभा अति सुन्दर आज बनी छवि भारीजी ॥ १ ॥
मानहुँ मदन बसंत मिले दोउ खेलत फाग सुहावैजी ॥
यह रस अधिक बन्यो मनमोहन लखि सबके मन भावैजी ॥
द्रुमन मध्य केसू तरु फूले अतिहि प्रकाश दिखावैजी ॥
मानहुँ निज निज सब मिल सुन्दर हरषि होलिकालावैजी॥२॥
दोहा–कुंज कुंज कोकिल सुखद, बोलति विमल सुप्यारि ॥
चढीं अटा गावति जनुः, निलज भई ब्रजनारि ॥
चौ०-निलज भई ब्रजनारि गारि जनु गृह पतियनको गावैजी ॥
जहां तहां करत कुलाहल भारी नाना खग सुख पावैजी ॥
मनहुं परस्पर नर अरु नारी गारी गाय सुनावैजी ॥
प्रफुलित लता विलोकत जिततित अलिसुमनन पर धावैजी॥१॥
मतवारे लपटे है धाई मानहु गणिका पाईजी ॥
पुहुप पराग अबीर बनाई लिये समीर सुहाईजी ॥
मनहुँ धाय अंगन परसाई करछोडत मन भाईजी ॥
नव पल्लव दल सुमन सुहाये विटपन छवि पर छाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जनु ठाढे रतिराज सँग, अति छवि कही न जाय ॥
बरन बरन बहु रँग भरे, फागुन साज सजाय ॥
चौबोला–फागुन साज सजाय दुंदुभी भवँर गुंज सोइ बाजैजी॥
रची मंडली मदन सुहावन जहँ तहँ छवि भरसाजैजी ॥
कहां लगि वरन बखानिये शोभा वृन्दा विपिन समाजैजी ॥
क्रीडत अति आनन्द भरे सब कान्ह तुम्हारे राजैजी ॥ १ ॥
रचहु फाग सुख अब नँदलाला सखियन विनय सुनाईजी ॥
सुनि गोपिनके वचन रसाला रची फाग सुखदाईजी ॥
सजहु समाज जाय तुम प्यारी विहँसित कह्यो कन्हाईजी ॥
हमहूं सखन संगलै आवैं रचहिं फाग ब्रजमाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मुदित भई ब्रजबाल सुनि, गये सदन नँदलाल ॥
सखा बुलाये श्याम तब, सुनि धाये सब ग्वाल ॥
चौबोला-सुनि धाये सब ग्वाल सखा तब सब मिल हरिपै आवैजी
आयो फागुन मास सुहावन सखन श्याम समुझावैजी ॥
भैया हो अब खेलो होरी ब्रजमें फाग रचावैजी ॥
यह सुनि ग्वाल बाल अनुरागे होरी साज सजावैजी ॥ १ ॥
कंचन कलस अनेक सुहाये केसर रंग भरायेजी ॥
अतर अरगजा विविध विधानो सहित सुगंध सजायेजी ॥
पीत अरुण बर वसन बनाये नवसुगंध मन भायेजी ॥
अंग अंग भूषण अति सुन्दर विविध नगन छबि छायेजी ॥ २ ॥
दोहा—नैनसैन शोभा हरण, बनी मंडली ग्वाल ॥
उसकाये बाहैं झगा, फेंटन भरे गुलाल ॥
चौबोला—फेंटन भरे गुलाल पान मुख कर कंचन पिचकारीजी॥
फेंटा पीत श्याम शिर सोहै तुर्राकी छबि न्यारीजी ॥
तापर मोरचन्द्रकाराजे कोटि चन्द्र बलिहारीजी ॥
केसर खौर महा शुभकारी बीच तिलक छबि भारीजी ॥ १ ॥
भौंहैं कुटिले[2] नैन रतनारे[3] कुंडल झलक सुहायेजी ॥
चारु[4]कपोल मनोहर नासा मंद हँसनि छबि छायेजी ॥
अधर अरुण चिबुक छबि सीवा कंठकपोत[5] लजायेजी ॥
झगाझीन रंगपीत सुहाये अति छबि अँग लपटायेजी ॥ २ ॥
दोहा—घेर दार संजाफ छबि, जरी किनार लगाइ ॥
झमकिरही छबि उमँगि भरि, सो छबि कही नजाइ ॥
चौबोला-सो छबि कही न जाइ चरण शुभ पनहीं अधिक सुहाईजी
कंचन मणिमय मोहन मनकी करचूडा छबि छाईजी ॥

१ प्रकार। २ टेढी। ३ अरुण। ४ सुंदर। ५ कबूतर।

लसत अँगुरियन मांझ अँगूठी नाना रत्न जड़ाईजी ॥
बाहु बिजौटा जटित मणिनके सो छबि अति अधिकाईजी ॥१॥
कटि परपट पीरो कसिलीनो कनक किनारि लगाईजी ॥
तापरखोसे सुभग मुरलिया मुक्तहार उरमाईजी ॥
माल गुलाब सुमनकी सुन्दर तापर ललित सुहाईजी ॥
चितवन हँसन रसाल सुहावन बन्यो छैल कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बन्यो रँगीलो यूथ सब, मधिनायक नँदलाल ॥
खेलत होरी श्याम ब्रज, उड़त अबीर गुलाल ॥

चौबोला–उड़त अबीर गुलाल ताल अरु मृदंग बजत सुहावैजी
डफ मुहचंग बीन सहनाई नाना गतिन बजावैजी ॥
और नगारनकी कल जोरी मुरली टेर सुनावैजी ॥
कोउ नाचे कोउ भाव बतावै सब मिल होरी गावैजी ॥ १ ॥
ब्रज वीथिन वीथिन सब डोले नर नारी कोउ पावैजी ॥
हो हो होरी मुख ते बोले तिनको गारी गावैजी ॥
भरि भरि पिचकारी रँग मारे अबिर गुलाल उड़ावैजी ॥
बोलत होरी वचन सुहावे करत सोई मन भावैजी ॥ २ ॥

दोहा–गोरसके माते फिरैं, घरन घरन विचजाय ॥
जो कोउ भाजिरहत घरहि, ताहि गहत सब धाय ॥

चौबोला–ताहि गहत सबधाय अटन चढि देखि रहीं ब्रजनारीजी
छज्जनते छूटत पिचकारी बरसतरंग अपारीजी ॥
गावत होरी गीत परस्पर देत दिवावत गारीजी ॥
भरि भरि अविर गुलालन झोरी डारति सब मिल ग्वारीजी॥ १ ॥
इत हरिके सब सखा संगके उतते मिलि ब्रजनारीजी ॥
मुदित गुलाल उड़ावहिं दुहुँदिश मारत रंग पिचकारीजी ॥
होत कुलाहल आनँद अति छवि रंगे महल अटारीजी ॥

अविर गुलाल कुंकुमाकीचहि ब्रज बीथिन भयो भारीजी ॥२॥

दोहा-करत फाग कौतुक हरी, सोहत सँग सब ग्वाल ॥
भीज रहे केसर रँगन नख शिख भरे गुलाल ॥

चौ०-नख शिख भरे गुलाल आनंद मन मुदित सखा सब गावैजी
गुणी जननके बाल नचावै बरषानेको जावैजी ॥
यह सुधि कुँवरि राधिका पाई सखियन सबन बुलावैजी ॥
नवसत साज सजा सब आतुर सुनत तुरत चलि आवैजी ॥१॥
बरन बरन बर बसन सुहाये भाल विंदुकारोरीजी ॥
मुखतमोल सुखकी छवि भारी होरी सुनि सब दोरीजी ॥
आई प्रिया निकट सब गोपी हँसि हँसि कहत किशोरीजी ॥
चलहु श्याम सँग खेलहिं होरी सुनत मगन भई गोरीजी ॥२॥

दोहा-ललितादिक सब नागरी, सब मिल सज्यो समाज ॥
तिन में श्रीकीरति कुँवरि, सबहिनकी शिरताज ॥

चौ०-सबहिनकी शिरताज रूपकी आगर गुणन सुहाईजी ॥
राजत भरी हुलास नागरी मन मोहन मन भाईजी ॥
रही छाय छवि पुंज निकाई नख शिख सुन्दरताईजी ॥
भूषण जाल लाल नगकेरे अंग अंग छवि छाईजी ॥ १ ॥
मुख छवि बरन सकै सो कोहै जाहि लखत बनवारीजी ॥
लसति नवलतन सुन्दर सारी केसरिया जरतारीजी ॥
गुल गचको लहँगा चटकीलो घेरदार छवि भारीजी ॥
कंकण किंकिणि शोभित सुन्दर नूपुरकी छवि न्यारीजी ॥ २॥

दोहा-राजति अति आनँद भरी, होरी साज सजाय ॥
रंग गुलाल सब सँग लिये, युवतिन यूथ बनाय ॥

चौबोला-युवतिन यूथ बनाये मृगमद केसर मेल मिलाईजी ॥
मथि मथि लीने कलस भराई हाथन में लै आईजी ॥

चली श्याम घन पै चपलासी गई जहां सुखदाईजी ॥
उतते संग सखा सब लीने आये कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
दुहुँ दिश गोल भयो रुपि ठाढ़ो लखि हरषे नँदलालेजी ॥
भरि भरि पिचकारी अति आनँद धाये सब मिल ग्वालेजी ॥
नवलासी लैलै करमाई सिमटि चलीं सब वालेजी ॥
मारत रंग लैलै पिचकारी डारत अबिर गुलालेजी ॥ २ ॥

दोहा—करत न कोऊ कानि मन, अबिर गुलाल उड़ाय ॥
मन भाई मुखते कहत, होरी वचन सुनाय ॥

चौबोला—होरी वचन सुनाय केसर रंग लैलै कर पिचकारीजी ॥
तकि तकि मारत पिय अरु प्यारी अति मन हरषित भारीजी
दुहुँ दिश चपल झराझर झेरी उडत गुलाल अपारीजी ॥
अबिर गुलाल घटा घन छाई खेलत फाग मुरारीजी ॥ १ ॥
लगि लगि रहे चीर अंगनसों पहिचाने नाहिं जावेजी ॥
रही गुलाल झलकि छबि छाई सो छबि कहत न आवेजी ॥
शशि सरोज दोऊ सकुचावे कवि उपमा कहा गावेजी ॥
लैलै नाम सुनावत गारी सुनि दुहुँ दिश सुख पावेजी ॥ २ ॥

दोहा—ताल पखावज ढोल तुरि, और बजावत बीन ॥
कहि कहि होरी मारहीं, ग्वालिन परम प्रवीन ॥

चौबोला-ग्वालिन परम प्रवीन नवल सब चपलासी ब्रजनारीजी
एक अबीर डारि मुख भागे इक मारति पिचकारीजी ॥
मच्यो खेल रंगरस अतिभारी कहति सखिनसों प्यारीजी ॥
छल बलकर कछु भेदहिं आली पकरहु अब बनवारीजी ॥१॥
आंख आंज मुख मांडहिं हरिको करि छांडो मन मानीजी ॥
ऐसे ये नाहिं मानि हैं मोहन हैं लंगर सुखदानीजी ॥
लेहिं दाँव आपनों सो अब सब वसन चुराये आनीजी ॥

तब इक तिय हलधर बपुकाछो परत नहीं पैचानीजी ॥ २ ॥
दोहा–निकसी जित ठाढे हरी, ओढिनीलपट बाम ॥
जानि भ्रात बलरामको, चलेलेन तब श्याम ॥
चौ०-चलेलेन तब श्याम गये जहाँ ताके ढिंग नँदलालाजी ॥
धरे धाय औचक तिन तबही लीने अंकम मालाजी ॥
आई धाय और सब नारी पकरि लिये गोपालाजी ॥
ढीठो बहुत दई तुम लाला कहति सकल ब्रजबालाजी ॥ १ ॥
सो फल तुम्हें आज सब देहैं कहत श्याम सों ग्वारीजी ॥
ठाढे दूर कहत सब ग्वाला पकरे गये मुरारीजी ॥
पिय मुख निरखि सकुच अति बाढ़ी हँसति राधिकाप्यारीजी ॥
किनहूँ लियो पीत पटकाहू काजर दृगन सुधारीजी ॥ २ ॥
दोहा–काहुन वेनी शीश गुंथि, मुख गुलाल लपटाय ॥
कोऊ लावति अरगजा, कोऊ रँग ढरकाय ॥
चौबोला–कोऊ रँग ढरकाय गयेहरि तबही छूटि पराईजी ॥
आय मिले निज सखनमझारी रही नारि पछिताईजी ॥
करमींजत पछितात कहति सब निज निज वचन सुनाईजी ॥
भली बनीही घात आज यह दाँवलेन नाँहिं पाईजी ॥ १ ॥
गये आजु तुम भजि नँदलाला काल्हि भाजि नाहिं पावोजी ॥
कर राखी जैसी तुम हमसों सो हमलेहैं दावोजी ॥
पीतांबर अपनो यह लीजै कैकोउ ग्वाल पठावोजी ॥
अब हम नहीं पकरि हैं काऊ कै आपहि लै जावोजी ॥ २ ॥
दोहा–हँसत सखा दैतारि सब, वेनी छोरत जाय ॥
कहत जाहु अब श्यामफिर, पीतांबरलै आय ॥
चौबोला–पीतांबर लै आय बहुरि अब जावहु कुँवर कन्हाईजी ॥
पीतांबर गहनेदे छूटे भाजतही बन आईजी ॥

तबहिं कह्यो हरि नंददुहाई अबहीं लेत मँगाईजी ॥
तब इक सखा भेष युवती करि दीनो श्याम पठाईजी ॥ १ ॥
गयो सुमिलि युवतिनमें जाई हँसतजाय तिनमांईजी ॥
कहत देउ पट धरें दुराई अबनहिं पावें कन्हाईजी ॥
अब यह पट हरिको जबदेहैं अपनों दाँव बनाईजी ॥
ऐसे कहि पटलियो सखिन सों चल्यो भाजं हरि पाईजी ॥ २ ॥
दोहा—फेरचो करसों श्याम लै, चकित भई लखिताइ ॥
भई चकित ब्रजबाल सब, लखि हरिकी चतुराइ ॥
चौ०—लखिहरिकी चतुराइ सखी सब आपुसमोबतराईजी ॥
भली बनी ही घात आज अब घिरवत वचन सुनाईजी ॥
गये आज बचकरि चतुराई अब नहिं बचहु कन्हाईजी ॥
अबतो लाग लगी है हमसों जबलगि दाँव न पाईजी ॥ १ ॥
तब कहियो हमसों ब्रजनारी छांड़हिं तुमहिं नचाईजी ॥
कहत श्याम अब भये सयाने तुमते नाहिं डराईजी ॥
जान लियो मैं कपट तिहारो हमरो कहा कर पाईजी ॥
अबहीं ग्वालन देहुँ लगाई छांडहुँ विनय कराईजी ॥ २ ॥
दोहा—जिनकी सखी कहात तुम, तिनकी कानि रखात ॥
यह सुनि सब सखियन कह्यो, कहा कही हरिबात ॥
चौबोला—कहा कही हरिबात तुम्हें अब नंद कि सोंह कन्हाईजी
जो नहिं विनय करावहु सुनि हरि लीने सखा बुलाईजी ॥
उत सब युवति होइ इकठोरी लैलैकर रँग धाईजी ॥
दिये सखनको मार हटाई भाज चले सुखदाईजी ॥ १ ॥
भाजे भाजे कहत सखी सब तारी दे ब्रजबालैजी ॥
जो तुम जांये नन्द महरके ठाढे रहो गोपालैजी ॥

१ युवावस्थाको प्राप्त-तिय। २ उत्पन्न किये।

फिरे बहुरि घनश्याम सखिन तन बोल लिये सब ग्वालैजी ॥
सिथल करी ब्रज बाम श्याम तकि मारत अबिर गुलालैजी॥२॥

लावनी ।

खेलत हैं दोऊ फाग श्याम अरु प्यारी ॥
सँगलीने गोपी ग्वाल प्रेम उर भारी ॥

टेक–दोउ भरे परम अनुराग कबहुँ कछु गावै ॥
कबहूं हरि मुखरस वादहि वचन सुनावै ॥
कबहूं ले नानारंग अंग बरषावै ॥
मारत है अबिरहि ताकि गुलाल उड़ावे ॥
दोउ रहे परस्पर अति आनंद निहारी ॥सँगलीने०॥१॥
नभ देखि रहे सुर सकल मगन सुख पायो ॥
जय जय कहि बरषित सुमन सबन यश गायो ॥
ललिता आई सब बीच यों वचन सुनायो ॥
आये तुम औचक श्याम जान नहिं पायो ॥
अब भई सांझ यह आज अहो बनवारी ॥सँगलीने०॥२॥
ऐहैं सजिकै नँद गांव कालिह वहां प्यारी ॥
देखेंगी तुम मन. सादहि सुनो हमारी ॥
यह वचन सुनतही भये मगन गिरिधारी ॥
वदी अवध खेलकी प्रात जान सुखकारी ॥
चले सदन सखा ले संगहि श्याम मुरारी॥संगलीने०॥३॥
घर हँसत खेलत संग सखा आये घनश्यामा ॥
चली हँसत प्रिया संग सखी गई निजधामा ॥
सब श्माम विलासहि आनत उर ब्रज बामा ॥
तजि लोक लाज मन वसे कृष्ण अभिरामा ॥

सुख पावत मन अति गावत दास विहारी ॥
सँग लीने गोपी ग्वाल प्रेम उर भारी ॥ ४ ॥
दोहा–कुँवरि राधिका लाड़िली, उठी प्रात सुखपाय ॥
लीनी सखी बुलाय सब, तिन्हें कहति समुझाय॥
चौ०–तिन्हें कहति समुझाय किशोरी हँसिहाँसि वचन सुनावेजी
नन्द गाँव चलि खेलहिं होरी यह विचार ठहरावैजी ॥
मिल मोहन सों यह सुखलीजै सुनत सकल हरषावैजी ॥
फगवा नन्द महर सों ल्यावै चलहु वेगि नँद गावैजी ॥ १ ॥
सामा सकल खेलकी लीनी रंग गुलाल भरावैजी ॥
भांति अनेक अरगजा कीने विविध सुगंध मिलावैजी ॥
भरि भरि भाजन कलस सुहाये अमित कहत नहिं आवैजी ॥
ले काँवरन अनेक सजाये नन्द गाँव सब जावैजी ॥ २ ॥
दोहा–सजि सजि सब नव नागरी, जाति राधिका संग ॥
रूप राशि गुण आगरी, अति छबि गोरे अंग ॥
चौबोला–अति छबि गोरे अंग कुंकुमा उबटि कनकतन नारीजी
एक वेश सुन्दर सब राजे निरखि मदन तिय हारीजी ॥
नवसत साज शृंगार बनाये अंग अंग सब ग्वारीजी ॥
चंद्रावलि ललितादिक सारी अमित गोप सुकुमारीजी ॥ १ ॥
प्यारी सकल श्याम सुन्दरकी कोकविवरन बतावैजी ॥
उपमाको त्रिभुवन न कोई शोभा कहत न आवैजी ॥
सुमन सुगंधन गूथी वेणी लटकत अति छबि छावैजी ॥
मोतिन मांग बनी आति नीकी केसर आड़ सुहावैजी ॥ २ ॥
दोहा–कुटिल भौंह अलके सुभग, मनमोहन मन भाइ ॥
खंजन नैनन लखि मृग लजे, अंजन रेख सुहाइ ॥
चौ०-अंजन रेख सुहाइ श्रवण विच तरवन रवि छवि पाईजी ॥

नकवेसर लटकन नग मोती शोभा अति दरशाईजी ॥
दशन[1] कुंद बिम्बा अधरन छवि चिबुक चारु सुहाईजी ॥
कंठ कपोत हार मोतिनके उर बिच अति छवि छाईजी ॥ १ ॥
जनु युग गिरि विच सुर सरिधारा कुच चकवा युग आयेजी ॥
बैठे मानहुँ दुहुँतट शोभित शशि मुख लखत लुभायेजी ॥
कर कंकण चूरी गज दंती मणिन जटित छवि छायेजी ॥
नाभि हृदय छवि कहा कवि वरनें कटि मृगराज लजायेजी ॥२॥

दोहा—चरणन नूपुर छवि बनी, अरु बिछियन झनकारि ॥
चाल मराल सुहावही, चलीं सकल ब्रजनारि ॥

चौ०-चली सकल ब्रजनारि कुसुम रँग लहँगापीत रँग सारीजी ॥
चमकत चहुँ दिशि लाल किनारी अति शोभा शुभ कारीजी ॥
नख शिख छवि शोभा अति सुन्दर बनी छवीली नारीजी ॥
राजत अति अभिराम तिनहिंमें कुँवरि राधिका प्यारीजी॥१॥
छड़ी सुमन पीरेकी सुन्दर सबके हाथ सुहावेजी ॥
होरी हरिके संग खेलनको नन्द गांव सब जावेजी ॥
प्रेम प्रीतिके रस वश प्यारी नन्द नँदन मन भावेजी ॥
गावहिं कोकिल कंठ निहोरी बाजे मधुर बजावेजी ॥ २ ॥

दोहा—करत कौतुहल केलि अति, अबिर गुलाल उड़ाइ ॥
घेरि लियो मिल नन्द गृह, वसत जहाँ सुखदाइ ॥

चौ०—वसत जहाँ सुखदाइ ठडी[2] तहाँ रूप लतासी नारीजी ॥
गावत फाग नन्दकी पौरी सुनि निकसे गिरिधारीजी ॥
हलधर ग्वाल गुपाल बुलाये सखिन सहित उत प्यारीजी ॥
खेलत फाग परस्पर दुहुँ दिश मच्यो खेल अति भारीजी ॥
मृगमद[3] कुंकम चन्दन घोरे लैलै रंग सब धावेजी ॥

१ दांत। २ दो। ३ कस्तूरी।

गोपी ग्वाल भरे झकझोरी अबिर गुलाल उड़ावेजी ॥
उड़त गुलाल घटा घन छाई केसर कीच सुहावेजी ॥
गान सुनत गुण गंधर्व लाजे बाजे मधुर बजावेजी ॥ २ ॥
दोहा–हो हो होरी कहत सब, भरे परम आनंद ॥
सखिन संग उत लाड़िली, इते सखा नँदनंद ॥
चौबोला–इते सखा नँननद श्यामको पकरनको सब दौरीजी ॥
गहन चहतही श्यामसुन्दरको पकरि लिये बलि जोरीजी ॥
अति निसंक सब ब्रजकी गोरी तामें अवसर होरीजी ॥
भरि भरि केसर रंग कमोरी लै हलधर शिर ढोरीजी ॥ १ ॥
ललिता गहि दृग काजरलायो अबिर गुलाल उड़ायोजी ॥
लेहु रोहिणी मात बुलाई ऐसे वचन सुनायोजी ॥
हास विलास विविध विध गायो बलि कहुँ जान न पायोजी ॥
छांड़ दिये बलराम सखिन तब ले फगवा मन भायोजी ॥ २ ॥
दोहा–हँसत श्याम बलराम लखि, आये आंख अँजाय ॥
हरि बलि सों ऐसे कहत, युवतिन पकरे धाय ॥
चौबोला–युवतिन पकरे धाय सिमिटसब सखाछुँडावनआयेजी॥
युवतिन सों छूटन नहिं पाये सबको मार हटायेजी ॥
श्यामहिंजीत यूथ में ल्याई भये सबन मनभायेजी ॥
रस लपटन नँद नन्द कन्हाई आपुन आय गहायेजी ॥ १ ॥
हँसत हँसत ब्रजनारि श्याम को प्यारीके ढिंग लाईजी ॥
कहिये श्याम बनी अब कैसी ढीठो बहुत मचाईजी ॥
वसन हरे तब आप हमारे यमुनाके तट आईजी ॥
लेहैं दाँव आपनो सो अब हमहूँ वसन छुडाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कान्ह कह्यो करिहो कहा, कहा कहति डरपाय ॥
सुनत वचन मुख श्यामके, ग्वालिन रही लुभाय ॥

चौबोला–ग्वालिन रही लुभाय श्यामको लखतिरूपसुखपाईजी
मुरली छोर बजावन लागी एक रंग भरलाईजी॥
एकन लियो पीत पट छोरी एक कहति कछु आईजी॥
हरिके हाथ गहे चन्द्रावलि काजर दियो लगाईजी॥ १॥
एकचिबुक गहि वदन उठावे एक गुलालउड़ावैजी॥
घेर रहीं हरिको सब बाला कहति सोई मनभावैजी॥
काहू वेनी गूंथ सँवारी मोतिन माँग भरावैजी॥
कोउ पहरावति लहँगासारी अँगिया सुभग सजावैजी॥ २॥
दोहा–निरखि निरखि हरिको प्रिया, मनहीं मन मुसकाइ॥
वसन अभूषण सजिरहे, पहिंचाने नहिं जाइ॥
चौबो॰–पहिंचाने नहिं जाइ श्यामको प्यारीके ढिंग ल्याईजी॥
निरखि वदन प्यारी हँसिदीनी श्याम हँसे सकुचाईजी॥
गहि प्यारी निज पाणि हरीको बीरादियो खवाईजी॥
सखियां करति किलोल दुहुँनकी गांठि जोर दइ आईजी॥ १॥
युग युग रहो अडोल ब्रजहिमें यह जोरी शुभकारीजी॥
लीने मध्य श्याम बनवारी मगन भई ब्रजनारीजी॥
पिय प्यारी मुखकी छवि जोहै अरस परस बलिहारीजी॥
त्रिभुवन छवि पटतर नाहिं कोऊ श्यामा श्याम मुरारीजी॥२॥
दोहा–नैनन सैन मिलाय कोउ, युगल निरख सुखपाय॥
गावति गारी महरको, डफ करताल बजाय॥
चौबोला-डफ करताल बजाय ग्वाल कोउ निकटनआवनपाईजी
भरि भरि मूठी गुलाल उड़ावे रही घटा छविछाईजी॥
फूली मानहुँ सांझ सुहाई अति छवि वरनि नजाईजी॥
तब ललिताको यशुमति माई भीतर बोल पठाईजी॥ १॥
हँसिके महरि बहुत सन्मानी विनती करि समुझाईजी॥

आजभई भोजनकी विरियां लखहु राधिका धांईजी ॥
बहुरि खेलियो होत सकारे खान पान करो आईजी ॥
ल्यावहु अब लाडिली लिवाई कीरति सौंह दिवाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तब यशुमति पै राधिकहिं, ललिता चली लिवाय ॥
सकुच जानि मन श्याम अति, छूटे हाहाखाय ॥
चौबोला–छूटे हाहाखाय लखत सब ग्वाल सखा समुदाईजी ॥
बन्यो आज मोहन अतिसुन्दर बलिको लियो बुलाईजी ॥
कहत सखा सब दे दे सौंहैं नँद पै चलहु कन्हाईजी ॥
चले भुजा गहि तहाँ लिवाई छवि वरणी नहिं जाईजी ॥ १ ॥
उत युवतिनके चितहि चुरावैं चले श्याम सुखदाईजी ॥
अति छवि देखि हँसे नँदराई सुनि जननी तहाँ आईजी ॥
निरखि हरषि लीने उरलाई आनँद उर न समाईजी ॥
किन यह कीनों हाल कन्हाई पुनि पुनि लेत बलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहति यशोमति श्याम सों, ये ऐसी ब्रजनारि ॥
सकुच हँसे नँदलाल तब, दियो सो भेषउतारि ॥
चौबोला-दियो सो भेष उतारि मुकुट शिर कटि पटपीतसुहाईजी
युवतिन सहित कुँवारि श्रीराधा नंद महर गृह आईजी ॥
भूषण बसन नवीन मँगाये दिये बसन पहराईजी ॥
अति सनेह वृषभानु दुलारी अपने हाथ सजाईजी ॥ १ ॥
वारति राई नोन यशोमति निरखत रूप सिहानीजी ॥
विविध भांति मेवा अति सुन्दर और मिठाई आनीजी ॥
सादर सबकी गोद भराये हरषि नन्दकी रानीजी ॥
रुचि भोजन करवाय सबनको अति आदर सनमानीजी ॥ २ ॥
दोहा–होरीको आनंद अति, रह्यो नंद गृह छाय ॥
फगुवा कहो सो दीजिये, कहति यशोमति माय ॥

चौबोला-कहति यशोमति माय सुनतही सखियन कह्यो सुनाईजी
फगुवामें मोहन हम ले हैं देखे बिन न सुहाईजी ॥
चिरजीवहु बलराम कन्हाई बढो वंश नँदराईजी ॥
यह अशीश सब हों मिल दीजै जिनते सुख ब्रज माईजी॥ १ ॥
अति आनंद मगन ब्रजबासी नाना विधि सुख पायेजी ॥
अष्ट सिद्धि नवनिध सबदासी ब्रज घर घर छवि छायेजी ॥
गोपी ग्वाल भये अनुकूला यमुना न्हान सिधायेजी ॥
जहां बरविटप विविध रँग फूले गुंजत भँवर सुहायेजी ॥ २ ॥

दोहा-फूल डोल हरि रचितहाँ, देत सबंन सुखकान्ह ॥
गावत गोपी ग्वाल सब, लगे यमुन जल न्हान ॥

चौ०-लगे यमुन जल न्हान निरखि सुर सुमन माल बरपायेजी॥
ब्रजजन पूरण काम कन्हाई करत खेल मन भायेजी ॥
लूट सुख रस फागको सब निज निज सदन सिधायेजी ॥
बलि मोहन सुन्दर छबि छाये सखन सहित घर आयेजी ॥ १ ॥
कियो जु फाग विहार हरी सो सादर पार न पावैजी ॥
लीला सिंधु अपार मनोहर विहारन जन किमि गावैजी ॥
चरित ललित सुन्दर सुखदाई हरिजनके मन भावैजी ॥
गावत सुनत सुजान हरीयश विहारन जन बलि जावैजी ॥ २ ॥

अथ सुदर्शनशापमोचन लीला ॥

दोहा-ब्रह्म पूरणानंद हरि, कीने विविध विहार ॥
शिव विंधि नारद शारदादि,लहत न कोऊ पार ॥

चौबोला-लहत न कोऊ पार किये हरि रहस्य चरित सुखदाईजी
ब्रज युवतिंन मिल रस शृंगारां सो छबि वरनि न जाईजी ॥
साध नहीं काहू मन राखी करी सबंन मन भाईजी ॥

ब्रजविलास रसकेलि बड़ाई विविध मुनीजन गाईजी ॥ १ ॥
जो कछु करहिं सोई सब लायक विहारन श्रीबनवारीजी ॥
सखा संग सबको सुखदीनो करी सुखद ब्रजनारीजी ॥
महर नंद पितु मात कहाये तिन हित नर तनु धारीजी ॥
बालकेलि रस करि विधिनाना दियो वसन सुखकारीजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रजजन राखे धार गिरि, मुदित भये सब ग्वाल ॥
कीने चरित अनेक ब्रज, भक्तन हित नँदलाल ॥

चौबोला–भक्तन हित नँदलाल लेतहैं युग युग प्रभु अवताराजी॥
असुर मार थापत सुरन हरि हरत भूमि भव भाराजी ॥
अति पुनीत पावन करन यश गावत संत अपाराजी ॥
करता हरता आप हरीसो पूरि रह्यो संसाराजी ॥ १ ॥
नंद ह्रदय यह मति उपजाई भक्तनके हितकारीजी ॥
चलिये आज सरस्वति तीरा पूजहिं शिव तप धारीजी ॥
लिये संग बलि मोहन दोऊ गोपी ग्वाल अपारीजी ॥
करत कुलाहल आनँद भारी पहुँचे तहाँ नर नारीजी ॥ २ ॥

दोहा–सरित पुनीत निहारि सब, कियो तहां स्नान ॥
अति आनन्द मगन मन, महिदेवन दियो दान ॥

चौबोला–महिदेवन दियो दान देखि देवस्थल अति सुखदाईजी
शारद पूजे शंभु भवानी अति प्रसन्न नँदराईजी ॥
पूजा करत सांझ ह्वै आई पूजत लोग लुगाईजी ॥
खान पान करि सहित हुलासा सोये सब सुख पाईजी ॥ १ ॥
सोये हरि हलधर सुखराशी सोवत सकल सुहायाजी ॥
आधी निशि अजगर इक आयो नंद चरण लपटायाजी ॥
उठे पुकार चौंक नँदराई सुनि ब्रजबासी धायाजी ॥
अजगर देखि डरे सब कोऊ छूटत नाहिं छुड़ायाजी ॥ २ ॥

दोहा–हारे यत्न अनेक करि, सर्प न छोड़त पाय ॥
कृष्ण कृष्ण करि नंद तब, गुहराये अकुलाय ॥
चौबोला–गुहराये अकुलाय नंद तब अति व्याकुल भय पाईजी॥
तब ब्रजवासी तुरतहि धाये ल्याये श्याम जगाईजी ॥
कह्यो महा इक व्याल नंदके रह्यो चरण लपटाईजी ॥
सुनत उठे आतुर गोपाला लख्यो निकट सो जाईजी ॥ १ ॥
परस्यो ताहि कमल पद पावन भक्तनके हितकारीजी ॥
छुवत चरण तब लई जँभाई दिव्य देह तिन धारीजी ॥
लाग्यो हाथ जोर गुण गावन जै जै जन दुख हारीजी ॥
जै जै जै ब्रज गोप विहारी सुन्दर श्याम मुरारीजी ॥ २ ॥
दोहा–ऋषी अंगिरा शाप मोहिं, दियो सो बड़े दयाल ॥
अती अनुग्रह उन करी, कीनों मोहिं निहाल ॥
चौबोला–कीनों मोहिं निहाल ताहिते हरिको दरशन पायोजी॥
जन्म जन्मको पाप नशायो प्रभु पदतन परसायोजी ॥
ऐसे विनती प्रभुहि सुनाई आयसु पा शिरनायोजी ॥
बहुरि नंदको शीश नवायो लखि नँद अचरज आयोजी ॥ १ ॥
तुमतो दिव्य रूप कोउ देवा पूँछो नँद तबताईजी ॥
सर्व शरीर धरयो क्यों आई सो सब कहो बुझाईजी ॥
नंद वचन सुन मन सुखपायो तब निज कथा सुनाईजी ॥
सुन्दर विद्याधर जु रूपमें मोते अरु कोउ नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–होय सहायक श्यामको, होइ सुदरर्शननाम ॥
गयो धरें अभिमान मन, इक दिन ऋषिके धाम ॥
चौबोला–इक दिन ऋषिके धाम गयो मैं रूप द्रव्य गर्वाईजी ॥
कियो न तिन्हें प्रणाम मूढमति ऐसी मोमन भाईजी ॥
जानि मोहिं जड अति अभिमानी ऋषिके मन यह आईजी ॥

जाय होउ शठ अजगर देहा दियो शाप ऋषिराईजी ॥ १ ॥
अजगर भयो तुरत मैं तबहीं देखि मोहि ऋषि राईजी ॥
भये बहुरि ऋषि राय दयाला तब यह कह्यो सुनाईजी ॥
कृष्ण दरशहैंहैं जब तोई परसि चरण सुखदाईजी ॥
बहुरि आपनो तन तब पैहै सो परस्यो पद आईजी ॥ २ ॥
दोहा—तेपदरज पावन करन, शिव ब्रह्मा नहिं पाइ ॥
जेरज मुनी प्रतापते, मेरे तन परसाइ ॥
चौबोला—मेरे तन परसाइ कहांलगि ऋषिकी करों बड़ाईजी ॥
संत समान नकोउ उपकारी दीनदयालु सदाईजी ॥
ऐसे विद्याधर सुखपाई अपनी कथा सुनाईजी ॥
बहुरि काल चरणन शिरनाई गयो लोक हरषाईजी ॥ १ ॥
नंदादिक आनंद भरे सब महिमा देखि अपारीजी ॥
कहत परस्पर कृष्ण गुणन तब गई बीत निशि सारीजी ॥
प्रात होत आनंद मगन सब घर आये नरनारीजी ॥
संग श्याम बलराम सुहाये जन विहारन बलिहारीजी ॥ २ ॥

अथ शंखचूडवध लीला ।

दोहा—ग्वाल बाल बलराम सँग, इक दिन कुँवर कन्हाइ ॥
दिवश अंतनिशिके समय, उडुगणकी छवि छाइ ॥
चौबोला-उडुगणकी छवि छाइप्रफुल्लित मालतिपरमसुहाईजी ॥
कुमुद सुगंध पवन मन मोहै भँवर गुंजमन भाईजी ॥
चले तहाँ देखन बन शोभा सो छवि कहत न आईजी ॥
ग्वालन मिल गावत दोउ भाई कबहुँक वेणु बजाईजी ॥ १ ॥
चली सुनत बंसीकी टेरैं गोपी गण बनमाईजी ॥
मगन भई लखि छवि अधिकाई तन मन बसे कन्हाईजी ॥

पहुँची श्री वृंदावन जाई राजत जहँ सुखदाईजी ॥
गोपी ग्वाल साथ सुखकारी विहरत दोऊ भाईजी ॥ २ ॥
दोहा–रूपराशि छबिनिधि दोऊ, सुन्दर सुभग शरीर ॥
मृदु मुसकन मोहत मनहिं, बैठे यमुना तीर ॥
चौबोला–बैठे यमुना तीर सन्मुख गोपीजन समुदाईजी ॥
पाछे सखा वृंद सब सोहैं सो छबि परम सुहाईजी ॥
करत गान मिलि मुदित सकल जन भरे प्रेमरस माईजी ॥
भये मगन उनमत्त जिमी सब रही देह सुधि नाईजी ॥ १ ॥
बाजत ताल मृदंग बीन अरु मुरली मधुर बजावैजी ॥
छाय रह्यो रस रंग परस्पर तान तरंग उड़ावैजी ॥
प्रेम मगन सब घोस कुमारी हरि छबि लखि सुख पावैजी ॥
को हम कहां नहीं कछु जाने हरिके रूप लुभावैजी ॥ २ ॥
दोहा–श्रवणन मुरली ध्वनि बसी, चंद्र वदन ब्रजनारि ॥
गृह बनकी कछु सुधि नहीं, हरि मुखरही निहारि ॥
चौबो०-हरि मुख रही निहारि सखिनके प्रभु स्वरूप मन भायोजी
तहां यक्ष औचक इक आयो शंखचूड तिहि गायोजी ॥
सो वह धनद अगुन अभिमानी प्रभु प्रताप नहिं पायोजी ॥
देखतही बलराम कन्हाई सब गोपिन अगुवायोजी ॥ १ ॥
उत्तर दिशिले चलो सखिनको घेरत ग्वाल जिमि गाईजी ॥
तब गोपिन हरि देखे नाईं भयो चेत तन माईजी ॥
कहां जात हम काके साथा भई विकल अकुलाईजी ॥
कृष्ण कृष्ण तब टेरन लागीं महा दुखित भय पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनत श्रवण आरत वचन, उठि आतुर दोउ भाइ ॥
अति समीप गोपीनके, तुरतहि पहुँचे जाइ ॥
चौबोला–तुरतहि पहुँचे जाइ डरोमाति तिनसों कहत कन्हाईजी

मैं आयो हौं धाय मारयाहि अबहीं लेत छुड़ाईजी ॥
शंखचूड फिरके तब देख्यो लखे काल दोउ भाईजी ॥
युवतिन छांड जीवले भाग्यो त्रसित भयो मन माईजी ॥ १ ॥
गोपिन पास राखि बलभाई आगे चले कन्हाईजी ॥
अतिही निकट धाय के दीनो मुक्काशीश चलाईजी ॥
भयो प्राण बिन अधम अन्याई उत्तम गति तिन पाईजी ॥
हुती एक मणि ताके शीशहि सो ल्याये सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—दीनी सो बलरामको, देख मगन ब्रजनार ॥
गोपी ग्वालन सहित दोउ, कीनों बहुरि विहार ॥

चौबोला—कीनो बहुरि विहार दुःख सो दीनों तुरत मिटाईजी ॥
परमानन्द सबन उपजायो अति हरषित मन माईजी ॥
करत विविध विधि हास विलासा गृह आये सुख पाईजी ॥
नव किसोर सुन्दर सुखदाई ब्रज जीवन दोउ भाईजी ॥ १ ॥
देखि देखि हरिके चरितनको परमपुनीत उदारीजी ॥
निशि दिन सब आनंद मगन मन ब्रजवासी नरनारीजी ॥
हरन सकल भय भीर दुष्टदल हरिजनके हितकारीजी ॥
नन्द नँदन बलवीर छवीपर बलि बलि दास विहारीजी ॥ २ ॥

अथ वृषभासुर वध लीला।

दोहा—नन्द नँदन संतन सुखद, कमल नैन छबिछाइ ॥
मुरली मुकुट धरे हरी, निरखत मदन लजाइ ॥

चौबोला—निरखत मदन लजाइ नित्य नव सुख ब्रजमें उपजावेजी
सुर नर मुनि हरिको यश गावे लखि ब्रजजन सुख पावेजी ॥
सुनि सुनि कृष्ण अगम गुण गाहा कंस असुर उर दहावेजी ॥
हितको हित जैसोको तैसो जैसो जाको भावेजी ॥ १ ॥

हित अनाहित यह प्रभुकी लीला सदा श्याम सुखदाईजी ॥
रीझ रीझ हरिको जो ध्यावे परम अभयपद पाईजी ॥
रहे कंस उरध्यान सदाई इक पल विसरत नाईजी ॥
शत्रु भाव सोचत दिन राती मारनकी मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा—अरिष्ट नाम इक असुर सो, लीनों नृपति बुलाय ॥
तासों कहि समुझाय सब, दीनों ब्रजहिं पठाय ॥

चौबोला—दीनो ब्रजहि पठाय असुरको मारन काज कन्हाईजी ॥
चल्यो असुर मन गर्व बढ़ाई पेरित काल नियराईजी ॥
नृपको शीशनवाय बहुरि यों कह्यो अरिष्ट सुनाईजी ॥
कितिक काज महाराज यह अब मैं करि आवत जाईजी ॥ १ ॥
इतनेको सोचत कहा हो तुम असुरनके राईजी ॥
बालक नँद अहीरके दोऊ पलमें मारों जाईजी ॥
वृषभ रूप सोइ असुर बनायो आयो ब्रज समुहाईजी ॥
महाकठिन दोउ सींग विसाला गिरि सम देह बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—खोदत भूमी सींगसों, खुरन उड़ावत छार ॥
दृग आरक्त अरु फेन मुख, पूंछ उठाय डकार ॥

चौबोला—पूंछ उठाय डकार तरुनसों कबहूं रगरत आईजी ॥
इत उत खोजत फिरत कन्हाई जहां तहां गाय डगाईजी ॥
बार बार गर्जत अति भारी डरपत लोग लुगाईजी ॥
बिडरीं गाय गोप सब भागे हरिको टेरत जाईजी ॥ १ ॥
काल रूप वृषभ इक आयो हरिसों कह्यो सुनाईजी ॥
वृषभ न होय असुर पहिचान्यो प्रभु सर्वज्ञ कन्हाईजी ॥
माति डरपौ चिंता कछु नाहीं विहँसि कह्यो सुखदाईजी ॥
चले असुर सन्मुख मनमोहन गोप ग्वाल सँग धाईजी ॥ २ ॥

१ निडर। २ राजा-कंस। ३ बैल। ४ पर्वत। ५ धूरि। ६ लाल।

दोहा–आगे ह्वै हरि हांकदै, तासों कह्यो सुनाय ॥
रे शठ कत तन तरु घसत, फिरत विडारत गाय ॥
चौबोला–फिरत विडारत गाय असुरसों ऐसे कहत कन्हाईजी ॥
नौ तन उपज्यो कंध जो तोई अबहीं देहुँ मिटाईजी ॥
कहां फिरत इत उत तू धावत मो सन्मुख लर आईजी ॥
वृषभासुर सुनि हरिकी वाणी रह्यो मन गर्व बढ़ाईजी ॥ १ ॥
याही बालकके वध काजै भूपति मोहिं पठायोजी ॥
भले शकुनमैं ब्रजमें आयो आवतही लखि पायोजी ॥
अबहीं याहि पलकमें मारों याही कारण आयोजी ॥
ऐसे अपने जियमें जानी हरिके सन्मुख धायोजी ॥ २ ॥
दोहा–टूट पर्‌यो तब श्याम पै, गहे शींग हरि धाय ॥
वह आवत हरिकी दिशी, हरि तिहिं देत हटाय ॥
चौबोला–हरिं तिहिं देत हटाय पाछेते पेलदियो बनवारीजी ॥
बहुरो वृषभासुर बल कीनो भयो क्रोध मन भारीजी ॥
ऐसे लरत असुर जब थाक्यो दीनो धरणि पछारीजी ॥
पर्‌यो असुर पर्वत सम मुखते चली रुधिरकी धारीजी ॥ १ ॥
असुर मारि उत्तम गति दीनी लखि नभ सुरहरषायाजी ॥
जैजै कहि सब स्तुति गावै हरषि सुमन झरलायाजी ॥
चकित भये सब ग्वाल परस्पर आपुसमें बतरायाजी ॥
हम जान्यो कोउ वृषभ यहहै असुर रूप धर आयाजी ॥ २ ॥
दोहा–मुदित कहत नरनारि सब, दुष्टदलन गोपाल ॥
विहारन श्रीनंदलाड़िलो, भक्तनकोरछपाल ॥
चौबोला–भक्तनको रछपाल असुरको मार्‌यो हरितिहिं कालैजी
भयो कंस तब बहुत दुखारी सुने श्यामके हालैजी ॥
आये ऋषि नारदतिहिं काला कह्यो सुनो भूपालैजी ॥

जिन मारे सब असुर तुम्हारे ते न नन्दके लालेजी ॥ १ ॥
हैं वसुदेव पुत्र वे दोऊ निश्चय मोहिं लखाईजी ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाई सो वह यशुमति जाईजी ॥
भयो कछू यह छल सुनि राजा करता गतिको पाईजी ॥
पहलो पुत्र भयो हो जब मैं कह्यो तोहिं समुझाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अपनो सोतैं बहु कियो, विधि कृत लख्यो न जाय॥
करहु यत्न अब वेगि कहि, गये स्वर्ग ऋषिराय ॥
चौबोला–गये स्वर्ग ऋषिराय कंस सोइ सुनी मुनीकी बानीजी ॥
भयो सोच वश मूढ अज्ञानी यत्न करन मन ठानीजी ॥
प्रथम देवकी अरु वसुदेऊ बोल लिये यह जानीजी ॥
राखे बहुरि वन्दिके माईं बहुत बुरो मन मानीजी ॥ १ ॥
कैसें मारों कहा करों अब निश दिन यह मन माईंजी ॥
शाल रहे नृपके उर दोऊ हलधर कुँवर कन्हाईजी ॥
मनहीं मन सोचत अति भारी अब धौं पठऊं काईजी ॥
असुर गये जे सबहि मरे अरु काहु न मार्‍यो ताईजी ॥ २ ॥

अथ केशीवध लीला ।

दोहा–असुरन माहिं बड़ो बली, केशी असुरहि जान ॥
कंसताहि तब बोलकंहि, अतिआदरसन्मान ॥
चौ०-अति आदर सन्मान कंसनृप लियो निकट बैठाईजी ॥
कहत कंस केशी सुन मोसों कहूंतोहिं समुझाईजी ॥
मेरी आन सकल ब्रजमाईं मोसमान कोउ नाईंजी ॥
ये सेवक मेरे नाहिं ऐसे जैसे मैं मनचाईजी ॥ १ ॥
तोसों कहूँ बात मैं जोई करि आवहु सो जाईजी ॥
ताते मोहिं यही पछितायो केशी अरज सुनाईजी ॥

ऐसो कहा कठिन प्रभुकाजै रहे तुम सोच अनाईजी ॥
और कौन दूजो तुम लायक तुम असुरनके राईजी ॥ २ ॥
दोहा–आयसु कहा सो दीजिये, मैं करि आवत जाय ॥
यह सुनि नृपहरषित भयो, केशी बहुत सिराय ॥
चौबोला–केशी बहुत सिराय कहत नृप ब्रज अब पठऊंकाईजी॥
करि आवै बिन प्राण नन्दके बालक दोऊ जाईजी ॥
आगे गये असुर सब तिनसों बन्यो काज कछु नाईजी ॥
यह सुनि आवत लाज असुर सब मारे बाल कन्हाईजी ॥ १ ॥
बड़ो वीरमैं तोको जानत यह मुहि निश्चय आवैजी ॥
ताकारण ब्रज तोंहि पठाऊं तू कछु काज बनावैजी ॥
मारि आव नँद बालक दोऊ छल बल करि कछु दावैजी ॥
कै लै आव बांधि दोउ भाई जीवन रहन न पावैजी ॥ २ ॥
दोहा–नृपकी आयसु पायके, चल्यो असुर गर्बाइ ॥
देखौंधों मैं ताय अब, कंस डरत है जाइ ॥
चौबोला–कंस डरत है जाइ देखिहौं को प्रगट्यो बलकारीजी ॥
अश्वरूप ह्वै ब्रजमें आयो गर्जत चहुँ दिश भारीजी ॥
झारत ग्रीव पूंछ विकराला वेगवंत वपुधारीजी ॥
भये विकल सब अति भय पाये भाज चले नर नारीजी ॥ १ ॥
अश्व एक आयो ब्रजमाई कहत श्यामसों ग्वालैजी ॥
कैधौं बहुरि असुर कोउ आयो अति भयानि विकरालैजी ॥
ब्रज आयो केशी असुर सोई जान लियो नँदलालैजी ॥
तब हरि ताके सन्मुख हर्षित चले कंसके कालैजी ॥ २ ॥
दोहा–कटि कसि बांध्यो पीत पट, शीश मुकुट वनमाल ॥
असुर विमोहन सुर सुखद, उर भुज नैन विसाल ॥
चौ०-उर भुज नैन विसाल हरिःके सन्मुख केशी धायोजी ॥

अति बल दोऊ चरण उठाये प्रभुपर चपल चलायोजी ॥
गहे बीचही हरि अविनाशी लखि ब्रजजन भय पायोजी ॥
छूट न असुर बहुत बल कीनों पाछे ठेल गिरायोजी ॥ १ ॥
गिरो धरणिपर मुर्छित भारी उठ्यो बहुरि रिसहाईजी ॥
पुनि पुनि चरण चपेट चलाई दाँव घातकर धाईजी ॥
अतिहि वेग हरि जात बचाई करत युद्ध सुखदाईजी ॥
देखत सुर मुनि चढ़े अकासा कछु दुख कछु हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा–चकृत गोपी गोप सब, चितवत अति भयपाय ॥
चाहत हरिको वदन गहि, पुनि धायो मुखबाय ॥

पुनि धायो मुखबाय हरी मन तब इक बुद्धि ऊपाईजी ॥
दियो हाथ ताके मुख नाईं हरि जनके सुखदाईजी ॥
वृक्ष समान भयो मुख माईं दाव सक्यो सो नाईजी ॥
एक हाथ ताके मुख दीनो एक केश गहे धाईजी ॥ १ ॥
पटक्यो ताहि फिराय कन्हाई भयो शब्द अति भारीजी ॥
धरक्यो उर सुनि कंस नृपतिको हन्यो असुर बनवारीजी ॥
देखत सुरगण भये सुखारी बरसे सुमन अपारीजी ॥
ब्रजवासिनको प्राण उबारयो कहत धन्य गिरिधारीजी ॥ २ ॥

दोहा–लिये यशोमति लाय उर, पुनि पुनि लेत बलाय ॥
बहुत दान विप्रन दियो, अति हर्षित नँदराय ॥

चौबो०-अति हर्षित नँदराय श्यामको लीने कंठ लगाईजी ॥
मुख चुंबत लखि छबि सुखपावै आनँद उर न समाईजी ॥
केशी मार श्याम घर आये घर घर बटी वधाईजी ॥
नन्द नँदनकी करत बड़ाई सब ब्रज लोग लुगाईजी ॥ १ ॥
धन्य धन्य ब्रजमें हरि प्रगटे भक्तनके हित आईजी ॥
सुखसागर शोभा अवधि प्रभु बलनिधि त्रिभुवनराईजी ॥

चिरजीवहु जोरी सुखदाई बल मोहन दोउ भाईजी ॥
विहारन प्रभुको सब ब्रजबासी देत अशीश मनाईजी ॥ २ ॥

अथ व्योमासुर वध लीला ॥

दोहा–गये संग गायन बनहिं, दूजे दिन ब्रजनाथ ॥
शोभित संग बलराम अरु, ग्वाल बाल सब साथ ॥
चौबोला–ग्वाल बाल सब साथ गई सब गाय बनहिं बगराईजी ॥
जहाँ तहाँ चरण लगी सुख पाई सो छवि परम सुहाईजी ॥
चोर मिहिचनी खेलन लागे ग्वालन संग कन्हाईजी ॥
भये मगन तन सुधि कछु नाई दुरतब नहिंमें जाईजी ॥ १ ॥
तबहिं कंस केशी वध सुनकै बार बार पछितायोजी ॥
व्योमासुर इक अति बलवाना ताको कंस बुलायोजी ॥
पठयो ताको तब ब्रजमाईं मारन श्याम सिखायोजी ॥
गोपभेष घरसो ब्रजआयो ढूँढत हरि बन पायोजी ॥ २ ॥
दोहा–ताको कोउ जान्यो नहीं, मिल्यो सखनमें आय ॥
व्योमासुर इक बुधि रची, बालक लेहुँ चुराय ॥
चौबोला–बालक लेहुँ चुराय इकेलो जब हरिको कर पाईजी ॥
तब मारों कै गहि लै जाऊँ यह ताके मन आईजी ॥
दुरैन[1] जात बालक वन जहँ तहँ असुर संग तहां जाईजी ॥
आवहिं एक एकही लैकै पर्वत माहिं दुराईजी ॥ १ ॥
जब यों बहु बालक हरलीने रहि गये थोरे ग्वालैजी ॥
व्योमासुर ने कपट कियो सो तब जान्यो नँदलालैजी ॥
धरचो धाँय[2] तब कुँवर कन्हाई भक्तनके रक्षिपालैजी ॥
तुरत असुर ले भूँपर[3]पटक्यो गयो स्वर्ग ततकालैजी ॥ २ ॥

१ छिपने। २ दौड़कर। ३ धरतीपर।

दोहा—असुर मारके श्याम तब, बालक शोधन जात ॥
ऋषि नारद आये तहां, देखि हरिहि हर्षात ॥
चौबोला—देखि हरिहि हर्षात ऋषीके भयो प्रेम उर भारीजी ॥
बीन बजाय लगे यश गावन जै जै श्रीगिरिधारीजी ॥
आदि पुरुष प्रभु अंतर्यामी अलख अनीह अपारीजी ॥
कोजाने प्रभु रूप तुम्हारो जगकरता असुरारीजी ॥ १ ॥
युग युग प्रभु यह रीति तुम्हारी भक्तन हित अवतारीजी ॥
धरणी भार पाप भयो भारी सुरन सहीत पुकारीजी ॥
त्राहि त्राहि श्रीपाति दैत्यारी राखहु शरण उबारीजी ॥
शशि अरु सूर्य भये सब साखी राज अनीती धारीजी ॥ २ ॥
दोहा—क्षीरसिंधु अहि फेणु प्रभु, श्रवणन परी पुकार ॥
तब जान्यो सुर संत सब, दुखित दनुजके भार ॥
चौ०-दुखित दनुजके भार सिंधु माधि वाणी प्रगट सुनाईजी ॥
कहो भूमि अवतार लेन हरि सो ब्रज प्रगटे आईजी ॥
जगत्राता दाता अभयपद श्रीपाति त्रिभुवनराईजी ॥
मथुरा जन्महिं गोकुल आये सोवत जननी पाईजी ॥ १ ॥
पयपीवतही बकी विनाशी सुनतहि कंस दुखायाजी ॥
इह अंतर जे दनुज पठाये ते प्रभु तुरत नशायाजी ॥
नन्द यशोदा बालक जानें गोपिन काम सुहायाजी ॥
धन्य धन्य ये ब्रजके वासी जिन हित हरि ब्रज आयाजी ॥ २ ॥
दोहा—मन बुधि बानी रहित हो, निगमहुँ अगम न पाइ ॥
युवतिन संग विहरत वनहिं, कमल नैन सुखदाइ ॥
चौबोला—कमल नैन सुखदाइ सुभग तन नील जलज बनवारीजी
मोर मुकुट कुंडल अभिरामा सोभित अति छवि भारीजी ॥
मुरलीधर पीताम्बर धारी बनमाला शुभकारीजी ॥

वसहु रूप यह मम उर मोहन गिरिधर कुंज विहारीजी ॥ १ ॥
यह अवतार जबहिं प्रभु लीनो आयसु सुर सब पाईजी ॥
दैत्य दहन संतन सुखकारी मारहु कंस कन्हाईजी ॥
जब यह गाथा गाय श्यामको नारद कह्यो सुनाईजी ॥
तब बोले हरि कृपानिधाना सुधा वचन मुसकाईजी ॥ २ ॥

दोहा–करौ सुरनको काज यह, जाहु वेगि मुनिराय ॥
नृप आयसु ते मधुपुरी, पठवहु मोहिं बुलाय ॥

चौबोला–पठवहु मोहिं बुलाय ऋषीको आयसु दई कन्हाईजी ॥
तब प्रणाम प्रभुको ऋषि कीनी अति हरषित मन माईजी ॥
हरषि चले मुनि नृपके पासा मन कछु बुद्धि उपाईजी ॥
यहै बात हलधर समुझाई जो ऋषि गये सुनाईजी ॥ १ ॥
जन्मेहो भूभार उतारन अखिल लोकके राईजी ॥
परम पुरुष अविगति अविनाशी हरि अद्वैत सदाईजी ॥
सिंधुरूप जनहित सुखकारी त्रिभुवन पति सुखदाईजी ॥
संकर्षण जब ऐसे भाष्यो सुनत श्याम हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तब हँसि बोले भ्रातसों, सुनों बात बलराम ॥
कहवाऊं निज प्रगटही, कंसनिकंदन नाम ॥

चौबोला–कंसनिकंदन नाम केशगहि देहों यमुनबहाईजी ॥
ऐसे बलि समुझाय शोधि सब ल्याये ग्वाल कन्हाईजी ॥
भये मुदित सब देखि गुवाला मारचो असुर सो ताईजी ॥
धन्यधन्य सब प्रभुनि सुनावैं लीने हमहिं बचाईजी ॥ १ ॥
गाय गोप हलधर सहित सब रहे परम सुख पाईजी ॥
सांझ समै बनते चले तब ब्रजको कुँवर कन्हाईजी ॥
आये नंद अवास विहारन पुनि पुनि लेत बलाईजी ॥
गये कंसके पास मधुपुरी मन सोचत ऋषिराईजी ॥ २ ॥

दोहा–करि मन बदन उदास मुनि, गये कंसके पाहि ॥
अति आदर करि कंस नृप, लीने ढिंग बैठाहि ॥
चौबोला–लीने ढिंग बैठाहि कह्यो मुनि क्यों मुखरह्यो झुराईजी
कहा चिंता मन बढी तुम्हारे कहो मोहिं समुझाईजी ॥
नारद कह्यो सुनो हो राई करहू वेगि उपाईजी ॥
देख्यो नन्द सुवनमैं जैसो त्रिभुवनमें कोउ नाईजी ॥ १ ॥
करत कहा रजधानी ऐसी कहा तुम्हें बुधिआईजी ॥
हम सब हितकी कहैं तुम्हारे दिन दिन होत सवाईजी ॥
तव वोल्यो नृप गर्व बढ़ाई कहा कहौ ऋषिराईजी ॥
यदपि कहत हो तुम हितकेरी तदपि मोसम नांईजी ॥ २ ॥
दोहा–कोटि दनुज मो सम बली, रहत सदा ममपास ॥
तिनको देखत सकल सुर,करत रहत मनत्रास ॥
चौ०-करत रहत मन त्रास सकल सुर जीत सकत कोउनाईजी॥
कोटि कोटि तिनके सँग योधा एक एक अधिकाईजी ॥
तिनके बल कहा कहूँ बखानी देखत काल डराईजी ॥
कोटि असुरकी भीर रहत खरी नित प्रति द्वारसदाईजी ॥ १ ॥
महा मत्तगज एक कुवलिया ऐसो त्रिभवन नांईजी ॥
ऐसे सुभट अनेक नाम कहि कहां लगि तुमहिं गिनाईजी ॥
कहा ग्वालके बालक दोऊ प्रगटे हैं ब्रजमांईजी ॥
प्रजालोक ब्रजके सब मेरे सेवा करत सदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बालक सुनि लज्जालगत, ताते मन सकुचाइ ॥
भली करी तुम बात यह, दीनी मोहिंबुझाइ ॥
चौबोला–दीनी मोहिं बुझाइ अबहिंमैं मनकी खुटकमिटाऊंजी॥
सुनहु और नारद मुनि मोसों मनकी बात सुनाऊंजी ॥
उनपर सेना कहा चढाऊँ नन्दहि सहित बुलाऊँजी ॥

डारों गजके चरण खुदाई औरहि प्रजा बसाऊँजी ॥ १ ॥
ऐसे कह्यो कंस तब मुनिवर कहत सुनो नृपराईजी ॥
अब तुम अपनो गर्व सँवारो वेगहि मारो ताईजी ॥
त्रिभुवन में को बलहि तुम्हारे यह कहि गये ऋषिराईजी ॥
कंस आपने जिय यह आनी मथुरा लेहुँ बुलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–यहै सोच उरमें बस्यो, नहिं विचार कछु और ॥
कैसे तिन्हें बुलाइये, करत मनहिं मन दौर ॥

चौबोला–करत मनहिंमन दौर आपही मैं ब्रजपर चढिजाईजी ॥
पुनि सकुचत है जीय हरीके जानत गुण मनमाईजी ॥
जन्महिंते वे हैं असुरारी प्रथमहिं बकी नशाईजी ॥
कागासुर गयो गर्व बढ़ाई गिरो इतहि फिर आईजी ॥ १ ॥
शकटा तृणा क्षणहिंमें मारे ख्यालहि असुर नशाईजी ॥
गये प्रतिज्ञा करि करि जोई फिर आयो कोउ नाईजी ॥
अब उनको इहां सहज बुलाऊँ काउअ लेन पठाईजी ॥
जाय नन्दसों कहै सुनाई श्याम राम दोउ भाईजी ॥

दोहा–सुनि सुनि इनके रूप गुण, अति नृपके मन भाय ॥
देखनको अब मधुपुरी, भोरहि इन्हें बुलाय ॥

चौबोला–भोरहि इन्हें बुलाय ऐसे करि जब ऐहैं दोउ भाईजी ॥
बहुरो जीवत जान न पावै यह मनमें ठहराईजी ॥
तब आतुर अक्रूर बुलायो सुनत डरयो मन माईजी ॥
किहिं कारण नृप वेगि बुलायो तुरत चल्यो उठधाईजी ॥ १ ॥
आतुर गयो पवँरि परधाई भीतर खबर कराईजी ॥
सुनतहि बोलि महलमें लीनो सुफलकसुत भय पाईजी ॥
कछु भय कछु उर धीर धरयो मन गयो नृपति समुहाईजी ॥
सोचतजिय उरलेत उसासा डरपत अति मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा-अनबोल्यो सन्मुख रह्यो, हाथ जोर शिरनाय ॥
हरषि वचन कहि कंस तब, लीनो ढिंग बैठाय ॥
चौबोला-लीनो ढिंग बैठाय आपही और तहां कोउ नाईजी ॥
बोल्यो नृप सुफलकसुत पाई कहों तोहिं समुझाईजी ॥
कहि जुगये नारद मुनि वाणी सो सब प्रगट जनाईजी ॥
सुन अक्रूर कहतमैं तोसों श्याम राम दोउ भाईजी ॥ १ ॥
जिहिं तिहिं विधि उनको मैं मारों यह मेरे मन आवैजी ॥
सो कछु दोष हृदय नहिं धारो, ऐसे वचन सुनावैजी ॥
पठऊं काहि सोई ब्रजजावै नन्दहि यों समुझावैजी ॥
बल मोहन देखनके काजै तुमहीं सहित बुलावैजी ॥ २ ॥
दोहा-सुने रूप गुण दुहुँनके, अतिशय अगम अगाध ॥
है नृपके उर ताहिते, देखनकी मन साध ॥
चौबोला-देखनकी मन साध दुहुँनको याही काज बुलावैजी ॥
काली पीठ कमलले आये तबते अति मन भावैजी ॥
सोबकशीश इन्हें अबदेहैं ऐसे नँदहि सुनावैजी ॥
यह कहिकै उनको ले आवै भेद नकोऊपावैजी ॥ १ ॥
ऐसे कहि जब कंस सुनायो सुफलकसुत यह जानीजी ॥
आपहि अपनो काल बुलावै मरन काल बुधि आनीजी ॥
कहत जु कछु मैं और याहि अब यह कबहूं नहिं मानीजी ॥
मारेगो यहि ठौर मोहिं यह जो कहिहौं कछु वाणीजी ॥ २ ॥
दोहा-काल याहि आयो निकट, कह्यो मानिहै नाहिं ॥
सुफलकसुत बोल्यो हरषि, यह विचार मनमाहिं॥
चौबोला-यह विचार मन माहिं कह्यो तुम नीक बात यहठानीजी
धन्य धन्य नारदमुनि ज्ञानी उन यह सत्यबखानीजी ॥
बडे शत्रु वे हमको दोऊ उपजे नँद घर आनीजी ॥